महेस सातसई

महेश अवस्थी

वसुमती प्रकाशन

प्रयाग

महेस सतसई

[अवधी हिन्दी के ७०० दोहे-सोरठे]

रचयिता

डॉ० महेशप्रतापनारायण अवस्थी 'महेश'

एम० ए० (संस्कृत-हिन्दी), पी-एच० डी०

प्राध्यापक, राजकीय जुबिली कालेज, लखनऊ।

वसुमती प्रकाशन

इलाहाबाद।

प्रकाशक

वसुमती प्रकाशन
६०२, दारागंज, प्रयाग

वितरक

१. हिन्दी परिषद,
   २२३, राजेन्द्रनगर, लखनऊ

२ अवधी साहित्य मण्डल,
   ११०, गौसनगर लखनऊ

३ हिन्दी प्रचार परिषद,
   ४११ ए-दारागंज, इलाहाबाद

प्रथम संस्करण : १९८७

मूल्य २० रुपये

मुद्रक
एकेडमी प्रेस,
दारागंज, इलाहाबाद

समर्पण

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान्

एवं

लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष

डॉ० सूर्य प्रसाद दीक्षित,

एम० ए०, पी०-एच० डी०, डी० लिट०

को

सादर समर्पित ।

—महेश

निवेदन

प्रस्तुत रचना का आरम्भ संवत् २०३७ विक्रमी के शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया शनिवार अर्थात् १४ जून, १९८० को प्रातःकाल हुआ था, जब मैं जयहरी खाल (लैन्सडौन-गढवाल) स्थित अपने आवास से राजकीय महाविद्यालय के पुस्तकालय जा रहा था।

मैंने प्रतिदिन लिखते हुए विजयादशमी रविवार, १९ अक्टूबर १९८० तक ४८६ तक के दोहों-सोरठो की सृष्टि कर ली थी। उसके बाद भी ३० जून, १९८१ तक दो० सं० ५४१ तक यदा-कदा लिखता रहा। तत्पश्चात् जब मैं जुलाई, १९८२ में राजकीय जुबिली कालेज, लखनऊ आ गया तो पुन: कवि-गोष्ठियों में भाग लेने लगा और लम्बे अन्तराल के उपरान्त गुरुवार, १५ अप्रैल, १९८४ से पुन: जब-तब लिखने लगा। तदुपरान्त मेरी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई तथा 'लोकगीत-रामायण' की पाण्डुलिपि भी तैयार हो गई। फिर मैंने रक्षा-बन्धन, मंगलवार, १९ जुलाई, १९८६ से नियम पूर्वक 'जन रामायन' लिखने का सकल्प लिया और ईश्वरेच्छा से महाशिवरात्रि, गुरुवार, २६ फरवरी, १९८७ को उक्त प्रबन्ध काव्य की पाण्डुलिपि तैयार हो गई। उसके भी ११७ दोहे-सोरठ 'महेस सतसई' के अन्त में (दो० सं० ५८२ से ६९८ तक) उपलब्ध है। अन्तिम २ दोहे लालगंज से प्रयाग लौटते समय शनिवार ६ जून, १९८७ को लिखे गये हैं।

मेरे परम मित्र डॉ० उमाशंकर शुक्ल ने प्रारम्भ से लेकर संख्या ५८१ तक के सभी दोहे-सोरठे देखने तथा उपयोगी परामर्श देने की अनुकम्पा की है। एतदर्थ मैं उनका अत्यन्त आभारी हूँ।

इस कृति से यदि सहृदय पाठको को कुछ भी सन्तोष हुआ तो मैं अपना श्रम सार्थक समझूँगा।

गंगा दशहरा, २०४४ वि०
७ जून, १९८७ ई०

महेशप्रतापनारायण अवस्थी
भारतीय भाषा भवन
४११ ए-दारागंज प्रयाग

महेस सतसई

गनपति गजबदनहिं सुमिरि, करि सरसुति कै ध्यान।
अबहिं भवानिहिं सरन तकि, रचना करत सुजान ॥१

सिसुबय तौ बीती सकल, जोबन जान तयार।
प्रभु महेस सरनहिं रखहु, निसिदिन करत गुहार ॥२

धन, धरनी, बिद्या सुफल, जौ रीझै करतार।
नाही गर्दभ श्रम बृथा, करत महेस पुकार ॥३

नाम सदा हिरदै बसै, चरनन प्रीति अपार।
कह महेस बन्धन कटै, घर सम सब संसार ॥४

आज अटरिया अलि चढ़ी, नाही बोलत बैन।
कजरारे नैनन निरखि, मैनहुँ मन बेचैन ॥५

लखि घनघोर घटा घिरी, चन्द्रबदन चहुँ ओर।
हिअरा अलि गदगद भयउ नटत मगन मन मोर ॥६

अधरन की लाली लखत, लालन मन बेहाल।
अली, लली की का कहउँ, जिन्ह उर बसत गोपाल ॥७

अधर अरुनिमा अनमनी, लखि ललचानेउ लाल।
ललित लुनाई लरिकई, लोचन लसन बिसाल ॥८

आवत देखि सिकार कहँ, हरषित अति मृगराज।
मृगनैनी कंपित थकित, जिमि पंछी लखि बाज ॥९

दास दसाई देखि कै, करहु कृपा कै कोर।
जाते भवबन्धन कटै, नटवर नन्द किसोर ॥१०

अरसाई अँखियानि त, ऐसी चितवति बाल।
मनहुँ उठावति नैनसर, मन बेधन गोपाल ॥११

गिरि तर उतरति सखिन्ह सँग, मति मतवारी बाल।
कनकछरी बिजुरीन बिच, फिरि-फिरि चितवत लाल ॥१२

गजगमिनिहिं कै गमन लखि, अद्भुत होत हुलास।
कदलि खंभ मानहु चलत, अन्तर करत उजास ॥१३

चन्दबदनि कहँ देखि कै, चन्दहि बदन मलीन।
अपुनै ते बढ़ि कै निरखि, मनहु चन्द्रमा दीन ॥१४

कजरारे नैनन निरखि, बोली सखि मुसुकाइ।
मनसिज धनु धारे अली, जगत जीतिहै जाइ ॥१५

परगट महँ जो घटि रहा, सो तो घट महँ पैठ।
कह महेस कर बन्दगी, तू मनुआ मत ऐठ ॥१६

जाके देखन कारने, मन्दिर मस्जिद कीन्ह।
सो महेस हिय महँ लखै, उत्तम आसन लीन्ह ॥१७

देखि लली बेंदी ललित, मन ललचानेउ लाल।
हिय महँ हलचल मचि रही, चलत चतुरई चाल ॥१८

कामिनि कानन का कहौ, जिहिं धारे कनफूल।
कानन कामिनि का कहौ, जिहिं धारे कनफूल ॥१९

कानन बारी देखि कइ, मन मधुकर बलि जात।
कानन वारी वारि चित, मनही मन मुसुकात ॥२०

चन्द्रवदनि नथ धारि कै, अद्भुत जादू कीन्ह।
चंचल चितवनि चितइ चलि, चगुल चित्त कइ लीन्ह ॥२१

कल कपोल लावन्य लखि, लालन भाव विभोर।
गदरारे जोबन निरखि, मनसिज मन भा भोर ॥२२

कामिनि भव बिंदिया दिहे, ऐसन लागत नीक ।
जैसेन जग कहँ जीति कै, लीन्हे बिजय प्रतीक ।।२३

राधे राधे रटत ही, आधे दुक्ख नसाहिं ।
स्याम नाम आगे कहत, सारे दुक्ख पराहिं ।।२४

गोरस लगि घर-घर फिरत, जनु-जनु जाँचत जाइ ।
घरनीके गोरस मधुर, सो नाहीं पतियाइ ।।२५

नवल वधू अभिसार हित, ठिठकत ठिठकत जाइ ।
दीपसिखा तन देखि कै, चतुर भ्रमर मँडराइ ।।२६

अरध राति अँधिआर अति, कहु केहि होइ न भीति ।
एक ते दुइ याते भने, जाइ ढिढाबै प्रीति ।।२७

पाती पै पाती लिखी, तजि कै सकल सँकोच ।
अली नली मारग मिले, फिर काहे कर सोच ।।२८

ऐसी चेती चतुरई, चतुर चित्त चलि जाइ ।
यह पाटी केहि मन पढी, मोहूँ देहु बताइ ।।२९

यह मन सनमुख तौ भयउ, प्रभु लीजै अपनाइ ।
कहहुँ न यह बंचक चपल, चरनन्ह तजि चलि जाइ ।।३०

अवध छेत्र महँ जनम मम, हम अवधी के दास ।
अवधी बीती जान प्रभु, राखहु अवधहिं पास ।।३१

चचल चितवन चतुर चित, चपल चुनौती दीन्हि ।
नायकहू वाको चितै वहि दिसि कहँ चलि दीन्हि ।।३२

आवत लखि ललना ललित, लालन लीन्ही राह ।
चितचाही वा दिसि चली, लेन सरित-चित थाह ।।३३

जानकि जननी जनहि लखि, करहु कृपा कै कोर ।
जेहि महेस लागी रहै, नव चरनन मन-डोर ।।३४

आइ अवध अपनाउ जन, जनकललों के द्वार।
रामललाहू नाउ पुनि, जन मन जीवनहार ॥३५

जनकलली के रीझते, जनके दुक्ख नसाहिं।
रामललाहू करि कृपा, सहजहिं महँ मिलि जाहिं ॥३६

नारी की नारी गही, हिकमत दई बताइ।
वा की गति औरहि भई, लै उसाँस मुसकाइ ॥३७

सखिहिं देखि बोली सुमुखि, लतिके सुन एक बात।
अब तरुवर चाहिय सुखद, मन्द-मन्द मधु वात ॥३८

धनि-धनि धनि मादक मधुर, मन्द-मन्द मुसकान।
छबि छलकनि ते गलि गयउ, गिरि गुरु गौरव मान ॥३९

दीपसिखा देखे धनी, लीन्हे लोचन मीचि।
पिय चाहत अद्वैतता, नेह मेह से सींचि ॥४०

कहत प्रथम लछिमी सबहि, नारायन तेहि बाद।
लछिमी की महिमा महा, सबहि करहिं फरियाद ॥४१

गिरि पर लखि बिश्राम गृह, तेहि पै बैठेउँ जाइ।
सेत जलद ऐसे मनौ, हेरम रुई लखाइ ॥४२

अब बिधि बल बुधि दै दियउ, हे पुरारि कुलदेउ।
आसुतोष दानी महा, करउँ कृपानिधि सेउ ॥४३

सिव-सिव, सिव-सिव सब कहत, सुनउ हमारिउ बात।
जन पर द्रवउ दयाल तौ मिटइँ सकल उतपात ॥४४

सिव-सिव, सिव-सिव सब कहत, सिव को परम प्रभाव।
जन दुखियारे दुख सहत, प्रभु मेटिअ दुख-दाव ॥४५

आजु अली औरहि लगत, कस न होइ मन मोह।
सुन्दरि सारी सबुज सग, सबही बिधि सो सोह ॥४६

चरन परउँ बिनती करउँ, कुल देवता महराज।
देखहु हमरिउ तन तनिक, होहिं सुफल सब काज ॥४७

छम छम-छम-छम हुअत जब, ओहिके नूपुर सोर।
छिन-छिन मनमथ मन मथत, चितवत जेहि की ओर ॥४८

सोने कै यह माल नहिं, यह गिरि-बन कै आगि।
याही मिस सुन्दरि प्रकृति, मनौ उठी अनुरागि ॥४९

कोऊ काह बिगारि सक, जौ जगपति अनुकूल।
धूत मुला मानत नहीं, रहत प्रकृति प्रतिकूल ॥५०

मुँह-मुँह ते मानहिं नही रहु तू एहिते चुप्प।
ई आपनि ओटै रहत, जैसे बोलत सुप्प ॥५१

निद्रा-नारी निलज अति, देख न ठाउँ-कुठाउँ।
एहिकै मन भावहि जबहि धरत उताइल पाउँ ॥५२

ई काहे कम्पित भला, जैसे पीपर पात।
बालाई धन ते धनी, एहिते कम्पित गात ॥५३

सिव-गिरजा पद बन्दि कइ, धरि गनेस कै ध्यान।
सुभ करमन का करु सुरू, निज सरूप पहिचान ॥५४

सबै देत उपदेस सब करत ग्यान कै बात।
अपने उप्पर पै परे, कुछू नहीं कहि जात ॥५५

करत-करत उपकार के उपकारी होइ जात।
रस देबे के कारने, आम रसाल कहात ॥५६

ई बबुरी बन बसि रहे, बबुरन की बतियात।
हियाँ तौ रसिकन्ह मडली, करहि रसालन्ह बात ॥५७

कागा कोकिल एक से, दूनहु तन के कार।
एक बोलहि के कारने, खिझत-रिझत संसार ॥५८

जब लग फल पावत रहे, रहे मगन मन माँह ।
अब इन्ह कहँ कोऊ नही, भये ठूँठ नहि छाँह ॥५६

मन मूरुख चंचल अधम, करइ काम कै बात ।
मन मोहन जेहि मन बसहि, करइ काम कै बात ॥६०

संगति तौ उन्हकै भली, जे नीके बुधिमान ।
मूरुख बैठक ना भली, परनिन्दा पर ध्यान ॥६१

कुटिल कुसंगति कुमति रति, करत नही सतकाज ।
जनम अकारथ जात प्रभु, राखहु जन कै लाज ॥६२

ई बालाई आमदनि, ते आकरषित आहि ।
बेतन कुल केत्तौ हुऐ, ई नाही पतियाहि ॥६३

ई कुल बिद्या ना चहहि, ई धन-लोभी आहि ।
लछिमी बाहन कहत इन्ह, बस लछिमी मन माहि ॥६४

जगत जननि मंगलकरनि, कर मंगल जग माहि ।
जेहिते जन-जन होइ सुख, दुखी न लोग लखाहि ॥६५

घर-घर कै यह रीति लखि, हमकह भा बिसवास ।
ह्यिाँ उनहि कै मान है, जिन्हकेरे कुछ पास ॥६६

उनहि उमँगि उठि लेत ये, लेत जे खुब घुमपात ।
कोकिल तू मौनहि रहहि, कागन केरि जमात ॥६७

इनहि बीस बिसुआ कहत, ई है बिसुआ दास ।
सदा धनहि चाहत रहत, करत सुजन उपहास ॥६८

कनवजिया बाँभन बडे, बडे बोल बड़ि बात ।
धन के ई भूखे रहहि, कबहूँ नाहि अघात ॥६६

बड दहेज लै कइ करहि, ई लरिकन कै ब्याह ।
लड़की ब्याहन बेर पै, सपनहु होत तबाह ॥७०

कानिकुब्ज कुलभूषन, करौ तौ तनी बिचार।
ईसा कै बिसई सदी, दायज दुखद दुधार ।।७१

मरवरिया बाँभन बड़े, बारे करै बियाह।
देखि-देखि कै हँसत जग, गुडिया-गुड्डा ब्याह ।।७२

दिज सनाढि औ परबती, पिऐं धूम दिनरात।
औगुन तौ त्यागै नही, सौगुन ई इतरात ।।७३

ईसा की बिसई सदी, बदी करत बड लोग।
बहु बैंदन का धन चहै, चाहै बाढहि रोग ।।७४

चातक तू चुप्पहि रहहि, इन ददुरन्ह के बीच।
तोरी बानी ना सुनहि, नीचन्ह चाहिअ कीच ।।७५

चटक-मटक के घटक ई, खटकत है मन माँझ
राजनीति के घटक ई, नित प्रात नित साँझ ।। ७६

जौ हाथन्ह पावहिं नही, कोटिन करे उपाइ।
तौ दाखन्ह खाटे कहहिं झूठे मुंह मुसुकाइ ।।७७

साँच न तुम कब्बौ तजौ, केत्तौ परै कलेस।
साँचहि राखे सब रहै, अनुभौ कहै महेस ।।७८

कूकर तोहि ते नीक है, सुन सूकर के पूत।
वहु तौ रखवारी करै, तू तौ पेटू धूत ।।७९

चन्नन चिलौली केर यह, उप्पर ते कर नेह।
मन के भीतर पैठि कइ, आगि लगावै गेह ।।८०

सिउ-सिउ-सिउ-सिउ के कहत, जिउ पावै आनन्द।
पिउ-पिउ-पिउ-पिय के रटत, पपिहा घन आनन्द ।।८१

ई तौ बैठे रेल पै, जैसे बाप जदाद।
तनकौ खसकत है नही, कोटि करौ फरियाद ।।८२

दान दहेजहि लेन कहँ, करत बहुत छरछन्द ।
इन्हकै होइ सुधार तौ, मिटइ सकल दुखदन्द ॥८३

अमित प्रसंसा ई करहि देखहि जौ सतसंग ।
पै कुटिलाई ना तजहि इन्हके ढग कुढग ॥८४

देखि दसा दुखियान कै पाछिल दिन कर याद ।
हरनाकुसहू ना रहे, दीन्हे दुख पहलाद ॥८५

दुखियन के दुख देखि कै, दुखी न होवै चित्त ।
धिक-धिक ऐसे धनिन्ह कहँ, धिक-धिक ऐसे बित्त ॥८६

निस-दिन भोगत भोग बहु, निस-दिन बाढ़त रोग ।
कह महेस सुख तब मिलहि जब त्यागै अति भोग ॥८७

सरबस तौ चाहत रहैं, बस-बस कै बस बोल ।
पै मानिक ते ना छिपै, सब जानत वहु पोल ॥८८

जौ जग जस उज्जर चहहु, रहहु सुकरमी मीत ।
धुनि तौ नित लागी रहै, करि हरि पै परतीत ॥८९

सब करनी के फल लहत, कर नीके सब काज ।
कह महेस करनी लखै, जानै सुकुल समाज ॥९०

जग जस जबरा पाइकइ, मत कर मनहि गुमान ।
जब लग हरि किरपा रहइ तब लग रह सम्मान ॥९१

चतुर चितेरे चित्त महँ, आई एक तरंग ।
सारी सारी रँग दई, लखि पुलकित अँग अंग ॥९२

जौ चाहहु आपन भला, भला करहु सब केर ।
जे चाहत पर अनभला, उनके मनहि अँधेर ॥९३

देखहु लीला राम कै चिर बिछुरे मिलि जात ।
चिरसंगी हू ना मिलहि जिन्ह संग खेलत खात ॥९४

आवाजाही देखि कै, मन अति होत निरास ।
ना जानै फिरि कब मिलहिं, रहे जे अपने पास ॥९५

कुकरम कबहु करहु नही, अस भाखत सब सन्त ।
पै लरिकाई ते बचहि जेहि राखहि भगवन्त ॥९६

आज सुद्ध ना घिउ मिलहि जिउ कह भावहि नाहि ।
सबहि मेल के चतुर नर, मेल करहिं छिन माहि ॥९७

गोरी गोरे गात गहि, कहत पिया ते बात ।
यही धरम पाले भले, परलोकहु बनि जात ॥९८

छिमा नाथ करि देहु अब, भै जो पुरबिल भूल ।
कुल देवता करुना करहु, जाहि जाइ भव भूल ॥९९

सब सुख सहजहि दै दियहु, बाबा भोले नाथ ।
जेहिते चित चिन्ता मिटहि तुम्हरे चरनन्ह माथ ॥१००

सजय-साँसद बाल-रवि, भयो अचानक अस्त ।
सासद-साँसद अति दुखी, होइगे अस्त व्यस्त ॥१०१

घर महेस अति दुखित भे, सुनी अमंगल बात ।
भागि अमेठी फूटिगे, गाँव सबै बतरात ॥१०२

गनपति गौरि गंगाधरहि गावहु गीत गँवार ।
दिन-दिन सुख-सम्पति बढइ बिजय मिलइ ससार ॥१०३

कल-कल, कल-कल करत ही, बहुत काल परवाह ।
उन्हकह कल कल ना परे, जेते लापरवाह ॥१०४

धन कह ती सब जन चहत, पावत नहि सब कोउ ।
बडे सुभाग सुधन मिलत, साँची सम्पति सोउ ॥१०५

सर-सर-सर-सर सर चलत, चितवत चकि चहुँ ओर ।
ये जोधा के सर नही, ये कामिनि चख कोर ॥१०६

सिवसुत सरसुति ध्यान कै, लै अम्बा कै नाम।
कबि महेस रचना करै, पूरै सब मन काम ॥१०७

श्रीसम्बत दुइ महस औ सैतिस भवा उदार।
प्रात द्वितीया जेठसुदि, सनि, सतसइ अवतार ॥१०८

उनइस सौ अस्सी इसी, चौदह जुन सनिवार।
भवा जैहरीखाल माँ, सतसइया अवतार ॥१०९

अवध छेत्र के मध्य महँ, एक चिलौली ग्राम।
तेहि महँ बन्दीदीन द्विज, कनवजिया बड नाम ॥११०

जिन्हके नीके पूत भे, पाच परम परबीन।
तिन्ह महेस परताप मैं, दूसर सुत सुतहीन ॥१११

कुल देवता कीन्ही कृपा, पिता कै आसिरबाद।
लगन लागि बिद्या लही, चहुँदिसि बड मरजाद ॥११२

गांव पुरान प्रसिद्ध है, चौहद्दी चलि जाउ।
भये दास खुसियाल जहँ, सन्त सरल सतभाउ ॥११३

निअर गाँव कोटवा भये, बकतावर महराज।
जिन्हकी दाया दीठि ते, बनहिं सबन्ह के काज ॥११४

एक इँधौना गाव है, पूरब दिसि कुछ दूर।
तहँ पै हाजीसाह भे, दुक्खदलन मसहूर ॥११५

अँगुरी महँ रतनेस भे, कबित सुहावन कीन्ह।
लाला दिलसुखराय ढिग, हमहूँ तिन्ह सुनि लीन्ह ॥११६

मम जनपद महँ होइ गये, एक ते एक महान।
मलिक मुहम्मद जायसी, महाबीर मतिमान ॥११७

आपन भारतदेस है, हम्हकह बहुत गुमान।
दक्खिन जलनिधि सेव रत, उत्तर दिसि हिमवान ॥११८

एही देस दरसन दिहिनि, बरँभा त्रिगुन महेस।
सरसुति लछिमी पारबति, पूजित प्रथम गनेस ॥११९

सात रिषी परसिद्ध भे, राजा भरत महान।
देवनदी आई जबहि सब कह भा कल्यान।१२०

इहैं राम औ कृष्न के, भए परम अवतार।
महा बुद्ध गाँधी भये, करुना कलित उदार॥१२१

एही देस-माँ होइ गये, बालमीकि औ ब्यास।
कालिदास, कृत्तिवास औ कम्बन, तुलसीदास॥१२२

सब बिधि सब कै ध्यान कै, सरसुति सुमिरि गनेस।
ई सतसैया कह रचत, अति मतिमन्द महेस॥१२३

माता गायत्री सुनहु, करहु न दास निरास।
एहि बुधि बल बिस्वास नहिं, तुव करना कै आस॥१२४

सतसैया सज्जन पढ़हिं बिद्या बुद्धि अगार।
कह महेस त्रुटि होइ जहँ, तहँ करि लेहिं सुधार॥१२५

घर घर तौ परताप हम, बिद्याभवन महेस।
अन्तहि नारायन मिले, पूरन नाम हमेस॥१२६

मनु सतरूपा ते भई, मानव सृष्टि अनूप।
जाते लोग मनुज कहहिं, मनई अवधी रूप॥१२७

सज्जन सज्जनता लहहिं दुरजन दुरव्यौहार।
सोभा देत सरोज नित, पंक मलिन आचार॥१२८

साधु सन्त कै मंडली, सब कर कर उपकार।
पै कुछ बगुला भगत नर, ताकत रहत सिकार॥१२९

गाँधी नेहरू तिलक औ बिपिन गोखले नाहिं।
अब तौ नेता कुटिल बहु, कुटिलाई मन माहिं॥१३०

ओट लिअइ खातिर सबहि, जन जन जाँचत जाइ।
पै चुनाव होइ जात जब, नेता नहिं पतिआइ ॥१३१

अब कबीर जायसी नहिं, नहि तुलसी नहिं सूर।
नही निराला पन्त अब, अब लोभहिं कबि चूर ॥१३२

चाहिअ लोभी नरन्ह धन, चतुर सुघरनी नाहिं।
बिन दहेज दारुन लिहे कबहूँ ना पतिआहिं ॥१३३

कह समाज सेवक सबहि, करैं न नेक सुधार।
दायज द्रौपदि चीर सम, बाढत जात अपार ॥१३४

गाँवन महँ चोरी हुऐ, सहरन चोर बजार।
गिरहकटी सगतर हुऐ, रच्छक भे बटमार ॥१३५

कहत बागपत काड भा, नारी नगन बजार।
एहि बिति लंका काडहू, भवा न अत्याचार ॥१३६

नारी कै लज्जा लुटइ, देइ न कोऊ साथ।
द्रुपदा पै बिपदा बड़ी, पति राखौ जदुनाथ ॥१३७

आज मिलावट सब जगह, घरन नही पर मेल।
मूढ़ महाजन होइ गये, चीजन माँ करि मेल ॥१३८

कहत करोडी लाल इन्ह, कैसे भये बिचार।
पहिले ई तसकर रहे, साथी कहिसि हमार ॥१३९

सिच्छक सरकारी महत, सब बिति दुक्ख महान।
यायावर सम ई भ्रमहिं देत न कोऊ ध्यान ॥१४०

उनहिन कै तौ पूछ जे मधुरी बानी बोल।
नहीं जोग्यता लखत अब, नहि उपाधि कै मोल ॥१४१

उनहिन प्रापर प्लेस पै, पैसा जिन्हके पास।
लछिमीबाहन हैं भले, रहत महेस उदास ॥१४२

चतुर चाटुकारी करत, तिन्ह पै कृपा अपार।
करुनाकर करुना करहु, हम्ह तोहरे चटुकार ॥१४३

इनहिं नहीं कुछ ग्यान सखि, तनकहिं उठे उरोज।
इन्हके तन के राज को, जानत महज मनोज ॥१४४

सखियन्ह सँग-सँग फिरनि वह, उमँगत उरहिं उरोज।
कह सखि नेबुआ नवल ये, या सरवरहिं सरोज ॥१४५

काजर-धनु धारे चलहिं जबहिं अहेरी नैन।
लखि कइ अलि चलि जात मन, तिन्हके संग सुख दैन ॥१४६

सखियन्ह सँग अठिलात अलि, नीरज नैन नचाइ।
रसिक भँवर मँडराहिं लखि, मन महेस मुसकाइ ॥१४७

सखि, नयनन्ह निज अंग लखि, बार-बार मुसुकाइ।
पै उरोज ढाँकत रहत, डीठि न कहुं गड़ि जाइ ॥१४८

जोबन कैं लखि आगमन, पुलकित ओहिके अंग।
सखियन्ह ते पूछत रहत, केहि कह कहत अनंग ॥१४९

खंजन के नैनान ते, इन्हकै सरवर नाहिं।
कह महेस देखत जबहिं रसिकन मनहु लोभाहिं ॥१५०

आँजन आँखिन्ह महँ दिहे जब देखत मुसकात
खंजन जुग बैठे मनहु, मैन लगावत घात ॥१५१

ई कजरारे नैन अलि, सबहिं करत बेहाल।
मनहु मैन सर के चलत, ई बेधत ततकाल ॥१५२

नैन नुकीले कोर लखि, रसिकन्ह मन बेचैन।
उपमा ढूंढत फिरत मन, जेहिते हारै मैन ॥१५३

कोउ कहत कमलहिं कलित, धरे अहै दोउ ओर।
कोउ कहत चन्द्राननहिं, घेरे चकित चकोर ॥१५४

सखी भाल बिन्दी दिहे सुमम सुहागिन ताज
मानहु विजय प्रतीक यह, जीते जन मन राज ॥१५५

छूटे केस ऐसे मनहु, कजरारे घन आहिं।
चन्द्र-बदन को ढकि रहे, मन मयूर ललचाहिं ॥१५६

जूरा बाँधत मन जुरा, अली चली सकुचाइ।
मनसिज उन्हके मन हरा, रह महेस मुसक्याइ ॥१५७

दुइ नागिनि लटकत लखे, लालन करहिं बिचार।
एक नागिनि तौ जिउ हरत, दुइ कस करहिं अचार ॥१५८

एक लट की बेनी अहै, नागिनि की अनुहारि।
जिनके चित पै यह चढ़ै, निज बिष देइ उतारि ॥१५९

कर करनी आगे रहै, चलै सबै मन मोह।
अलि, ऐसी बेनी बनी, करनी कर जिमि सोह ॥१६०

कानन कै केहि बिति कहउँ, कानन बारी सोह।
कानन वारी यह नही, यह रतिपति मन मोह ॥१६१

ऐरन लखि बैरन भई, नवल सखी नव देह।
कानन तकि-तकि थकि रही, तेहि पै सुदिन सुदेह ॥१६२

अरे नासिका कील तौ अलि मन कै भै कील।
पै अचरज ऐसी किली, निकसत नहिं बिन ढील ॥१६३

नथुनी घरनी कै लखत, पिय अति लोचन लोल।
नथुनी घेरे बन्द भे, बोलि सकै नहि बोल ॥१६४

सोने कै जंजीर अलि, गीवा रही सुहाइ।
सो नीकी लागै नवल, लालन मन ललचाइ ॥१६५

देखि दुक्ख उपजत हिये, होत जबहि अलि हार।
पै ई तन हारहि लखे, उपज अनन्द अपार ॥१६६

करत चुहल चुरिया पहिरि, नायक मन मुस्क्यात ।
खन-खन, खन-खन जो बजै, सुख दुइ गुन होइ जात ॥१६७

सोने की अगुठी पहिरि, मनहि-मनहि मुस्क्याइ ।
सो नेकी ऐसी करी, मनहूँ लीन्ह चुराइ ॥१६८

करधन कटि धारे फिरत, अँगना अँगना माँझ ।
अलि, धर धन नहि डीठि भलि, चल सुदेस तन साँझ ॥१६९

यहु अलि आज अनूप ढँग, कड़ा-छड़ा छबि अंग ।
पावन मन भावन भली, पावन पीउ उमंग ॥१७०

धन पहिरे पायल चली, सखी देखि मुसुकाहि ।
केहि तन यह बिजुरी गिरी, मन घायल होइ जाहि ॥१७१

तिय पग बिछिया नवल लखि, पिय के हरषित नैन ।
करत प्रसंसा बिबिध- बिधि, समुझत तिय पिय सैन ॥१७२

आज हवा पछुआ चली, लाजहु भै बेलाज ।
लरिका लरकी सम सजहि, लरकी लरिका साज ॥१७३

अब लहँगा ओढ़नी नहीं गाँवहु पहिरी जाहि ।
सारी तर साया पहिरि, नारी चलहि सोहाहि ॥१७४

चन्द्रबदनि चचल चकित, चितवत चारिउ ओर ।
अलि तेहिकह आवत लखत, मानहुँ चकित चकोर ॥१७५

अमा रैन लखि कइ चली, अभिसारहि एक नारि ।
चन्द्रबदन के कारने, चहुँ दिसि रही निहारि ॥१७६

चली जात अभिसारिका, राति हिमाचल राज ।
'हनीमून-हट' देखि अलि, मगन भई तजि लाज ॥१७७

यह हिमगिरि सरकार भलि, किय मधुरैन कुटीर ।
करत केलि कल्लोल सखि, नवदम्पति रनधीर ॥१७८

करत केलि अनुराव पिय प तिय ब नत नाहि।
चित पै लै लीन्ही ललकि, नव उमंग मन माहि ॥१९९

देखि दसा दामिनि दमकि, दरद दीन दिल माहि।
मितकारहि रुखि जात अलि, सुकुमारता मराहि ॥१८०

अरे बाँसुरी तू भली, करत अधर रस पान।
मोहन मन मोहित मगन, छेडत मधुरी तान ॥१८१

सखिअन सँग मेहदी रची, मगन लखी एक बाल।
सजि-बजि पिय चितवत परी, परी सरिस ततकाल ॥१८२

सावन मन भावन परे, झूला गाँव गेरावँ।
तरुनहि मन मनसिज हरे, बढ़त न आगिल पाँव ॥१८३

सखी एक बिनती करत, झूला देखि बढ़ार।
पेगहार चित नहि धरत, चितवत हार बहार ॥१८४
सावन गाँवन मँह परे, झूला चारिउ ओर।
नवल किसोरी मगन मन, पगन नवल किसोर ॥१८५

गाइ रही सावन सुतिय, झूलहि सावन माँझ।
मन भावन गाँवन राखे, खिचहि चित हिय माँझ ॥१८६

सोरह-सतरह साल की लरकी गाँवन माहि।
गावहि सावन काजरी, झूलहि दै गलबाहि ॥१८७

नैहर कह पठउा नही, प्रियतम परम कठोर।
सावन भखि होइहै जुरी, झूलन्ह के चहुँओर ॥१८८

गाल फुलै बैठी लखी, तनिक न बोली बात।
पिय अर घर झूला रचा, सुख दीन्हा गहि गात ॥१८९
अली, आज मनकी नही, मनकी करी सुनार।
प्रियतम का गलबाँह दै, परी रैन रतनार ॥१९०

गोरिहिं गात अली लखी, कही सखिन समुझाइ।
गरी-गरी-सी है परी, परी-परी बतराइ ॥१९१

कसक रही पूरी करो, नेह सहित हरखाइ।
कसक रही कटि आजहू, सखी मनहि मुसुकाइ ॥१९२

कटि कसि, हँसि-हँसि, मगन-मन, भुरई सहित सनेह।
मनमानी ऐसी करी, सहजहि सेद सुदेह ॥१९३

खरी देखि तिय कहँ ललन, लीन्हा ढिग बैठाइ।
सहित सनेह सकान तजि, सुरति कीन्हि हरखाइ ॥१९४

सकुच सहित लखि कै ललन, होइगे अधिक अधीर।
सहित सनेह सुकेलि करि, मन को कीन्ह सुधीर ॥१९५

देखि सबन्ह सोवत अली, पिय लीन्हा सनकारि।
स्वामिहिं सहित सनेह लखि, दीन्हा तन-मन वारि ॥१९६

गहि-गहि गलबाही ललित, करत अधर रस पान।
करत कलित मनरथ फलित, हरत मानिनी मान ॥१९७

धनि रतनावलि देबि धनि, धनि-धनि तुलसीदास।
तोहरे पावन चरित ते, चहुँदिसि भगति-प्रकास ॥१९८

नाथ कुटिलई कीन्हि बहु, अब आइनि तुव पास।
कह महेस प्रभु दया करि, छोरौ भव कै फाँस ॥१९९

नित रिरियात न कोउ सुनहि दीनन्ह कै फरियाद।
कह महेस एहि ते करहि, दीनबन्धु कै याद ॥२००

नीच ऊँच पद पाइ कै, मन महँ करहिं गुमान।
कोहू कै नाहीं सुनहि करहिं सुजन अपमान ॥२०१

कोटि जतन केत्तौ करौ, कोउ न पूछत बात।
राम दया मुल होत जौ, सबै काम बनि जात ॥२०२

रमानाथ कै कृपा भै, भे दुख दारिद दूरि।
अब उतान होइ ना चलहि देखहि दीन न घूरि ॥२०३

चतुर चित्त चितवत चकित, चंचल सम चहुँ ओर।
इत उत कत भटकत फिरत, सेवहि नन्द किसोर ॥२०४

छल छदमाई छाँडि कै, कर महेस हरि ध्यान।
जेहिके सुमिरन ते कटइ, जम कै फन्द महान ॥२०५

देखि चलब बचपन सहज, जबरि जवानी जात।
जरा देखि आवत चली, मन महेस पछितात ॥२०६

गऊ बने ते ना बनहि सबहि बनावहि नित्त।
एहि ते नित चौकस रहहि कह महेस सुन मित्त ॥२०७

सरन गहइ वृषभानुजहि, पावन जमुना तीर।
नित प्रति पीवइ प्रेम पय, पुलकित होइ सरीर ॥२०८

दिओ नाथ अब ध्यान करि, करुनाकर करुनेस।
जेहिते दुख दारिद दुरइ, चरनन्ह परत महेस ॥२०९

गीध्र अजामिल भीलनी, सुगति दीन्हि भगवान।
जन महेस आवा अधम, करहु नाथ कल्यान ॥२१०

कहहु काह कैसे करी, ई बैलन महँ बैल।
सीधे सुबचन सुनहि नहि, नाहीं छाडहि गैल ॥२११

जेहिकै लाठी तेहिकै भइँसि, अइसन यह संसार।
दीनबन्धु ध्याओ सुनो, दीन महेस गुहार ॥२१२

गजगवनी तज गरब सब, चल पतिबरचा चाल।
नाही तौ होये अवसि, तोर खराब हवाल ॥२१३

घर निकरे ते होइ गये, प्रीतम तोताचस्म।
नित इत-उत डोलत फिरहि, अंग रमाये भस्म ॥२१४

चातक कै लागी रटनि, पिउ-पिउ कहत पुकारि।
दानी जलद पसीजिए, बरसिअ स्वाति सुबारि ॥२१५

देखा एकै आचरज, सर तट तलफत मीन।
दया जलधि कीजै दया, होइ तोहि महँ लीन ॥२१६

सोहत जेहि के सीस ससि, ग्रीवा सोहै नाग।
गहु गंगाधर कै सरन, लहु नित नव अनुराग ॥२१७

नकन टारि भाभिहु प्रबल, रीझे ते त्रिपुरारि।
भनन कहाँ भागत फिरत, ऐसे प्रभुहि बिसारि ॥२१८

गति निरखत बदरान कै, बदरा होइ गे नैन।
रसा देखि कै नीरसा, मन महेस बेचैन ॥२१९

गुरु ग्रह ग्रह नवएँ परे, कहत सुजन सुभ होत।
पै सूरन के कारने, भवा न भागि उदोत ॥२२०

जहँ रवि ससि सोहत उभय अरु उडुगन समुदाइ।
तहँ महेस खद्योत लघु, चमकत अति सकुचाइ ॥२२१

जहँ रबि ससि उडुगन उए, तहँ को गनहि खदोत।
पै महेस चमकत निरखि, रसिकन्ह मन सुख होत ॥२२२

दया दीठि ते जग रहइ, सब सुख सिधि सन्तान।
करुनापति करुना करहु, सुखद सुरुज भगवान ॥२२३

कटे चैत कटि जात दुख, नाजै भरे भँडार।
कृषकन्ह सुख कहि जात नहि, कृमतन उमँग अपार ॥२२४

उमँगत उर आनन्द अति, निरखि खेत खरिहान।
अब किसान कै सान बढ़ि, भये महेस सुधान ॥२२५

सभा साज सुबिधान सुख, बिजली नल भल काज।
भये भाइ हलधर मगन, पाये सुखद सुराज ॥२२६

आमन के बागन निरखि बाग-बाग मन मोर ;
गाँवन अमराई सुखद, सुख उमंगत चहुँ ओर ॥२२७

सब कहँ सब बिति सुखद अति, आउब सुनि रितुराज ।
अगवानी खातिर चले, मलयानिल महराज ॥२२८

कामिन मन मनमथ मथत, कामिनि देखि सिगार ।
अति महिमा रितुराज कै, रति पति करत बिहार ॥२२९

जेहि दिन ते रितुराज कै, थापित भवा निसान ।
पुरई पुरवा गाँव गन, गाँव गीत कर गान ॥२३०

गाँवन महँ मधुरितु सुनहु, होरी फाग धमार ।
मगन मन्न मनु गज फिरहिं, बालक जुवा लबार ॥२३१

कौनिउ राधा रँगि रही, पकरि स्याम कै गात ।
कौनिउ पिचकारी लिहे, करत सुरँग आघात ॥२३२

सुजन भगत प्रहलाद सम, करउ राम ते नेह ।
जरइ होलिका दुष्टमति, लह महेस सुख गेह ॥२३३

देखत अति पुलकत हृदय, बौरे बिरिछ रसाल ।
कल कोकिल कूजत कलित, खिझवहिं बाल गोपाल ॥२३४

कहत सेंदुरिहा, गड़पका, कोनवा, कोनहा, आम ।
खरबुजहा झोथरहा भल, धरे भदैला नाम ॥२३५

जल थल नभ चारी सकल, सहज सुहृद सम जानि ।
कह महेस गाँवन सुमनि, धरल नाउँ निज मानि ॥२३६

जामुन सिच्छित जन कहत, गाँवन कहत फरेंद ।
कठजमुनी खाटी लगहिं, करत महेस सुभेद ॥२३७

गाँवन महँ जहँ तहँ मिलहिं गोभी कुँदुरू साग ।
लौकी, तोरई, सेमह, कद्दू छपरन लाग ॥२३८

कहत सबै आलू अमिलि, परवर मूरी मूर।
सैंढा घुइयाँ गाँव मिल, मूरन बण्डा पूर ॥२३६

नीकि सिंघारा होहि भल, निअरे गाँव तलाव।
नित टूरहिं चढ़ि घन्नही, कहहिं कहार सुभाव ॥२४०

छिनगुरिया छुइ छलि रहे, छैल छबीले ओहि।
एहि बेरिया अलि टरि चलै, पठवन के मिस मोहि ॥२४१

अँगुरी छुइ पहुँचा गहत, इन्हकै ऐसी बानि।
एहिते सखी सचेत रहु, जाइ नही कुल कानि ॥२४२

धरम धारि अरथहि लहहु, तेहिते करु कुल काम।
एहि बिति ते मिलि जात पुनि, राम धाम अभिराम ॥२४३

दासी-सी भरमत रहइ, मुकुती जिन्ह पग पास।
तिन्ह पाँवन कह गहि रहउ, करि महेस बिस्वास ॥२४४

का करिहै लै मोच्छ कहँ, कह महेस तन खीन।
लीन रहै नित ही सुखद, भगति नीर मन मीन ॥२४५

करत-करत गुन-गान हरि, पाव सुगति सब सन्त।
एहिते पुनि मिलि जात सुभ, संसृति सागर अन्त ॥२४६

धरम करम सुचि मति करत, होत अनन्द अपार।
मिलत सगुन जलयान ते, भौजलनिधि कै पार ॥२४७

सखे, सीख सुन सत्य सिव सुन्दर सगुन सुनाम।
भव जलनिधि जलयान-हरि ते पहुँचइ हरि-धाम ॥२४८

बड़े दानदाता भये, सत हरिचँद महराज।
कासी कबि हरिचन्दहू, नामी दानि समाज ॥२४६

सदा राखि उर सत्य सिव, चल सन्तन कै राह।
जेहि मग महँ सबकह मिलत, नित सुख सीतल छाँह ॥२५०

सदा सोच तजि कर भगति, जो सब बिति सुख देत ।
गज गनिका सेबरी अधम, तरे नाउ हरि लेत ॥२५१

कबहु नाहिं पाटी पढी, पसु पच्छी पाखान ।
पर सब भवसागर तरे, चढिकइ भगती जान ॥२५२

सुत पहिलौंठी के मुए, जननि जनक मन सोच ।
भले भूमि भाखहि नहीं, सूल सदा उर कोच ॥२५३

अहो भाग्यि नीके मिलहि बिद्या बनिता बित्त ।
जिन्हते सुख निसिदिन मिलै, रहै हरेर सुचित्त ॥२५४

सुसुत सुमित्र सुवित्त सुख, सुबँधु सुलच्छन नारि ।
बडे भाग्य ते नर लहत, कहत महेस बिचारि ॥२५५

सुमति सुपुत्र सुदम्पती, दुरलभ एहि संसार ।
कुमति कुपुत्र कुदम्पती, करहि जगत अँधियार ॥२५६

जग सब स्वारथ ते सना, सुरुचि न सुमति सनेह ।
एहिते मन महँ दुख रहइ, बिरथा लागइ देह ॥२५७

करन करत नित दान, बड दानी हरिहू कहत ।
पर कुसंग नहिं मान, अपमानहि आजहु महत ॥२५८

नित हरिहर कै नाम ले, रे मतिमन्द गँवार ।
गीता गुरु उपदेस ते, कर महेस भव पार ॥२५९

नित प्रति सुभ कारज करै, लै रघुनाथहि नाम ।
मिलइ सुमति सुभ गति सुजस, धरम धरा धन धाम ॥२६०

सब दिन कोऊ ना रहा, एहि मेला संसार ।
सुमति साधि सौदा करइ, लइ हरिनाम उदार ॥२६१

जेहि घर आवै बिपति नटि, करै बहुत खेलवार ।
पर हरिहर परताप ते, चलै न एकहु बार ॥२६२

गरब गँवार न कबहुँ कर, यह हरि केर अहार।
नारद के भे भगत कै, हाँसी भै संसार ॥२६३

कह महेस लौ लागिहै, जब हिये बन माहि।
प्रेम प्रकासहि देखि कै, हरि सहजै मिलि जाहिं ॥२६४

कबहुँ दयानिधि की दया, होइहि तीरथ बास।
आसुतोष सुमिरन करै, हिय राखै बिस्वास ॥२६५

नाही कौनहु भेद, हरि-हर कीजिअ प्रीति भलि।
मन महँ करै न खेद, जीवन सुखमय होइहै ॥२६६

नीति धरम उपकार कर, साँचे राख अचार।
सत्य अहिंसा सहज सुख, करत महेस सुधार ॥२६७

गाँधि महतिमा होइ गये, सत्य धरम अवतार।
तिन्हते सिच्छा लेइ जग, कहत महेस कुमार ॥२६८

सरल बिनोबा भाव भल, गाँधी के पद चीन्ह।
सहृदय सरबोदय सुमन, जीवन अरपन कीन्ह ॥२६९

जैपरकास भये हियाँ, क्रान्ति समग्र बिचार।
कहत लोकनायक सबै, स्वारथ रहित अचार ॥२७०

छिमा दान दीजै सुजन, कीजै हृदय बिचार।
आत्मिक सुख उपजै अमित, यह जीवन कै सार ॥२७१

कलम पाय मन कलम कर, रहै कमल की भाँति।
कह महेस तब मन लहै, सहज सुखन्ह कै पाँति ॥२७२

अधिक सिधाइउ देत दुख, यह अनुभव कै बात।
टेढि मेढि बरु बचि रहै, सीधेन पर आघात ॥२७३

कर गहि लेइ उठाइ तेहि, जे नीचे गिरि जाइ।
कह महेस मन मुदित होइ नवल रूप अपनाइ ॥२७४

सहसबाहु दसबदन नृप, चले गये सब त्यागि ।
कह महेस मन मीत ते, प्रभु चरनन रहु लागि ॥२७५

मानत नहिं कतनौ कहै, सन्त सुनीति सुबाल ।
दुरजोधन हरिहु कहे खल नाही पतियात ॥२७६

को बिकरन कै बात सुन, दुरजोधन जहँ मान ।
सकुनि कुमति जेहि सँग रहे, द्रोपदि सह अपमान ॥२७७

खाइ लोन सब महि रहे, अपने मन कह मारि ।
भीषम द्रोनहु बिषम दुख, द्रुपदहिं देखि उघारि ॥२७८

डबल्व निमुनिया के भये, दुहिता सुत भा मौन ।
कोनहु रहा महातिमा, चला गवा तजि भौन ॥२७९

जोति अखंड हिये बरै, साँचे गुरु श्रीराम ।
जेहिके उजियारे रहै, पावै सुख अभिराम ॥२८०

सुख सरीर सम्पति सुजन, नस्सर संतन्ह गाव ।
एहिते धीरज धारि उर, हरि लीला लौ लाव ॥२८१

आय गइनि तोहरी सरन, मातु मोहिं मैं लेहि ।
ग्यान पियूष पियाय उर, प्रभु चरनन्ह मति देहि ॥२८२

जेहि बिति सुत कल्यान, जननी जानहि नीकि बिति ।
हौ सुत अति अग्यान, करउ कृपा पावउँ सुमति ॥२८३

निरखि जननि पायन परे, सुत तन दीजै ध्यान ।
करै कृपा करुनायतन, आसुतोष भगवान ॥२८४

नहिं कठोर हियमात, कतनौ औगुन भवन सुत ।
देखि तनय बिलखात, करै कृपा सब बिति जननि ।२८५

जननि सरन बिस्वास, आसुतोष करिहहिं कृपा ।
दास न होइ हतास, मनोकामना पूरिहहिं ॥२८६

बांभन बरन उदार, कान्यकुब्ज भूषन सुनो ।
करो मास्त्र ब्यौहार, जहँ तक तुम ते निभि सकै ॥२८७

करब कराउब जग्गि, पढ़ब पढ़ाउब अति भला ।
अपने सुकरम पग्गि, दान लेइ द्यावो करै ॥२८८

चाल चलन चतुराइ, चहत सबहि सब बिति भला ।
सपने सुभ सिख पाइ, करै सहज पंडित करम ॥२८९

छाड़ नही कुल कानि, कुल देवता सिव हिय बसहि ।
जेहिते होइ न हानि, सदा सोचि सुकरम करइ ॥२९०

खलन चाल बद चाल, सज्जन सतपथ पर चलहि ।
उन्ह कहँ काँट कराल, इनहि मिलइ छाया सुखद ॥२९१

कर महेस उपकार, यह रसाल सिच्छा भली ।
ऐसे परम उदार, मारेहुँ मीठे देहिं फल ॥२९२

सो ही ते उतरत नही, जो बारेहि चढि जात ।
एहिते बारेहिं देन भल, कहत सुजन भल बात ॥२९३

चाहत वे तन बढन बहु, पर बे तन न लखाहि ।
एहि ते सगुनहिं मनहि चढ, बहु भगतन चित चाहि ॥२९४

चाबि चबैना परि रहै, लेइ राम कै नाम ।
कह महेस प्रभु पूरिहै, सारे जन के काम ॥२९५

देबि रतन रतनावली, सरल सुसीला नारि ।
लघु दोहा संग्रह लिखा, तुलसिनि की अनुहारि ॥२९६

करतब कुछ ऐसे करइ, जेहि ते मिलइ सुधाम ।
नाहि त गरदभ पीठि पर, लादी लिहे तमाम ॥२९७

करत करत करनी कठिन, कठिनाई कटि जात ।
कह महेस अभ्यास ते, कठिन सहज लखियात ॥२९८

निज कर गहहु कृपाल प्रभु, मम पतग मिन डोरि।
जेहिते ऊपर ही चढ़ै, सकै न कोऊ छोरि ॥२९९

औचक औसर आवही, सुखप्रद दरसन होइ।
कह महेस प्रभु की दया, दया करहि सब कोइ ॥३००

काल महा बिकराल प्रभु, करउ सुकृपा प्रकास।
जेहिते सब बिति सुख मिलइ प्रभु चरनन बिस्वास ॥३०१

सिव सिव सिव सिव सुखद मुनि, सुमन सुमन कर लेहिं।
प्रभु पूरहिं मन कामना, सब बिति सुख दै देहि ॥३०२

सुमति भये सुख होत है, कुमति भये दुख होइ।
एहिते सुजन सुमति लहहिं करहिं भजन सब कोइ ॥३०३

आये भैरोनाथ ढिग, को न लहै मन काम।
एहिते जन चरनहि लहै, सन्तति सुख धन धाम ॥३०४

देखि बढत इरषा इन्है, इन्है न भावै रीति।
ये ऐसी बातै बकै, तोरै तरु सिसु प्रीति ॥३०५

नीके साथी के मिले, बाढत प्रेम अपार।
पर तेहि कै बिछुरब दुखद, जैसे बिपति पहार ॥३०६

ईस सुनै सब जनन कै पुरवै मन कै आस।
जाते सब कहुँ होइ सुख कोउ न होइ निरास ॥३०७

अब हरि ते बिनती यहहिं नव सुख मिलै अपार।
दिन-दिन हरि पद रुचि बढै, सब जीवन कै सार ॥३०८

काह करी कैसे करी, कोउ न बोलत साँच।
सब कह तो कुरसी परी, ताहि न आवै आँच ॥३०९

सबहि भाँति सुख होत है, सुमति भये भल भाइ।
कुमति बसी जिनके हृदय, तिन्हहि न कोउ सहाइ ॥ ३१०

कबि का कम समुझत अहहिं, जे कम अकिल गँवार।
निज उल्लू साधत रहहिं अब के सब चटुकार।३११

ऐसे लोगन्ह का कहउँ, जे स्वारथ अवतार।
निज भाषा सस्कृति सबहि, भूलि रहे चटुकार ।।३१२

खेद मनहि एहि बात कै जिन्हहिं न भाषा ग्यान।
झूठे रिझवत सबन्ह कहँ, पावत सबते मान ।।३१३

करहु नीक करमन्ह सदा जेहिते होइ सुनाम।
द्विज महेस मरबै भला, भये नाम बदनाम ।।३१४

कबहुँ न इरषा करहु प्रिय यह चिन्ता कै चेरि।
एहिक बाढे मति घटइ अवगुन बाढ़इ ढेर ।।३१५

सन सत्तर से सांपि गा अस दुरगुन कै रोग।
छात्र नकलची होइ गये ऐसा बना कुजोग ।।३१६

साँझि बनावहिं पुरजिड़ी, सोवहिं पाँव पसारि।
देहिं परिच्छा नकल करि, गुरुजन रहे बिचारि ।।३१७

कैसे लागी पार दुरगुन नाव सवार सिष।
गुरु करिया लाचार अभिभावक सोचहिं नहीं ।।३१८

सोचि रहे सिच्छक सुमन, सूझहि नाहिं उपाइ।
कह महेस चिंतित चितहि निरखि नकल समुदाइ ।।३१९

छात्र न सोचहिं सान्त चित, नकल करहिं ते आज।
काल्हि करइहहि होइ गुरु, हँसिहहि सकल समाज ।।३२०

सासन सास समान भल, देहि मातु सम ध्यान।
जन महेस सिच्छक जगत, करहि सास सनमान ।।३२१

सास सुभग सुख देन हित, बधू करइ कह सेव।
सेवा ते मेवा मिलहि, कह महेस महिदेव ।।३२२

सासन कै सासन भला पर कह निज करि लेइ
कह महेस हिअ बच समुझि, सब सुख साधन देइ ॥३२३

सासन ससुर समान भल, सेवक बधू समान।
जन महेस पूछत रहइ, होइ सकल कल्यान ॥३२४

सुखद सुमति सासन लखे, सब केरे मन मोद।
कह महेस हरषहि हृदय जिमि सिसु जननिहि गोद ॥३२५

जीवन बीता जात, अब तौ करहि विचार बुत।
जन महेस पछितात, नीकि दिवस बहु बीति गे ॥३२६

ओछन्ह के ढिग बैठि, ओछिन्ह सीखहि सीख तू।
जे जस बक्कहि ऐंठि, तस महेस तोहू तनहि ॥३२७

मन मम मानहि बात, चलइ राह सीधी सरल।
करइ न तू उत्पात, अस उत्तिम भोजन भखइ ॥३२८

मानव धरम उदार, करन हेतु ससार हित।
तेहि बिनु पढा-गँवार, जन महेस जहँ तहँ फिरहि ॥३२९

केवल तन के गोर, मन के ई करिया अहहिं।
कह महेस दइ जोर, इन्हको बातन्ह ना परइ ॥३३०

चाह गई चिन्ता मिटी, मुल चीनी बहु दाम।
गुरहु छ चालिस किलो अब, कर महेस परनाम ॥३३१

दूध दहिउ के देस, दूधहु अब दुरलभ भवा।
चाह किहिसि परबेस, सहजहि खातिर होन हित ॥३३२

चाह-चाह कह करत हौ, चाह कै छोडहु चाह।
सक्कर बड मक्कर करत, गुरहु भवा बद राह ॥३३३

बातइ चालिस सेर, अउर कुछू ना लखि परहि।
मन का मनका फेर, मन महेस धीरजहि धरि ॥३३४

अरे सेठ देवता तनिक देखहु दुखी समाज।
जनता पर करि कै कृपा मेटहु महंगी आज ॥३३५

एक झलक-सी प्रलय की देखि परी छिन माहिं।
चक्रवात जलधार अति गाँवन्ह घर भहराहिं।३३६

गाँव सबहि व्याकुल मनहु भा ब्रज मघवा कोप।
गिरधारी कै रट लगी आज दिखी नव ओप ॥३३७

कोऊ गारी देत, कोऊ करत सराहना।
दइउ सहज सुनि लेत, अग्यानिन्ह कै बात सब ॥३३८

करहु आस बिस्वास, धरम करम नीके सदा।
हरि नहि करत निरास, देत उचित फल समय पर ॥३३९

जौ न परहि कुछ सूझि, अति अँधेर चहूं दिसा।
लीजिअ प्रभु तें बूझि, बैठे मन-मन्दिर सदा ॥३४०

आपनि-आपनि सबहिं सुठि, स्वारथ रत संसार।
परमारथ कै बात तौ, बिरले जन चित धार ॥३४१

करत बात ऐसी मनहु परमारथी महान।
अपने पर संकट परे सूझत एहि बिति ग्यान ॥३४२

नित उठि ध्यावइ ईस, करइ करम नीके सदा।
तौ रीझइ जगदीस, कह महेस त्यागइ भरम ॥३४३

नाहक करत गुमान, हरि लीला अदभुत अगम।
कन ते होत पखान, परबतहू राई सरिस ॥३४४

चारि दिवस कै चाँदनी, पुनि अँधेरहू पाख।
जन महेस मन समुझि अस, कबहुँ न मानहि माख ॥३४५

उरइहि रसगुल्ला मधुर, गोझिया कालपि केरि।
रायबरेलिहि दहिबरा, पेठा अगरा हेरि ॥३४६

गोरखपुर चूरा दही, नीकि कचौरी कासि ।
सुघरि कचौरी गलिहि लखि, दरसन कर अविनास ॥३४७

गोझा-प्रेमी जानि कइ बुआ बनार्वाहि बूझि ।
जन महेस खार्वाहि मगन देखि सनेही सूझि ॥३४८

साँझ सुहारी सुन्दरी अउर गउनई गोव ।
नाव चिलौली परि गवा चिलवलि ठार्वाहि ठाँव ॥३४९

चहत चटनिया चतुर नर जस भोजन के संग ।
हास-व्यंग तस कवित महँ पुलकावत सब अंग ॥३५०

सारी पूरी खाइ कइ लेहि न कबहुँ डकार ।
ई गँवार जन कबि कहहि, बनमानुष के यार ॥३५१

जै हनुमान महाबली, जग जस बड़ बिस्तार ।
करहु कृपा करुनायतन, सुनहु महेस पुकार ॥३५२

सब जन के संकट हरहु, हरहु अखिल अग्यान ।
संकर सुत करुना करहु महाबीर हनुमान ॥३५३

जानत जे महिमा अमित, गावत गुन गुनधाम ।
पवनपुत्र बिनती सुनहु, कहत महेस प्रनाम ॥३५४

जेहि जन पै करुना करत, राम भगत हनुमान ।
तेहिके सब संकट कटत, कहत महेस अजान ॥३५५

जानकिपति करुनायतन प्रिय सेवक हनुमान ।
करहिं कृपा जन पै सदा करत महेस बखान ॥३५६

सोहत गंग तरंग सुठि आसुतोष के सीस ।
हरत सकल संकट बिकट कह महेस जगदीस ॥३५७

दीनबन्धु दुखहरन सिव, गंगाधर सुखधाम ।
हरहु नाथ दुख दुरित सब कीरति देहु ललाम ॥३५८

जीभ सदा बस महँ रहइ, करम करइ निहकाम।
कह महेस धरि हिअ हरिहिं, पावइ जन सुखधाम ॥३५९

सोवत-सोवत दिवस गा, सोचत-सोचत राति।
कह महेस हरि सरन गह, मिटइ दुखन कै पाँति ॥३६०

बासर बीते बातनहि, रैन सिरानी सोइ।
कह महेस चेते बिना, हरि दरसन नहिं होइ ॥३६१

गाँधी बाबा होइ गये कलिजुग महँ अवतार।
दुष्ट दलन, मगल करन, जन महेस बलिहार ॥३६२

सैसव साधारन रहा, गहे सत्य कै राह।
जीवन सत्य प्रयोग सम, सत्य आचरन चाह ॥३६३

जीवन महँ दुख दुसह सहि, हिअ धरि प्रभु कै नाम।
पकजवत जग माँहि रहि, करम कीन्ह निहकाम ॥३६४

द्वापर के श्रीकृष्न प्रभु, त्रेता के श्रीराम।
कलिजुग के गाँधी भये, कीन्हे चरित ललाम ॥३६५

सत्य अहिंसा अस्त्र लहि, दुष्टन्ह दीन्ह पछारि।
गौतम सम गाँधी भये, कहत महेस पुकारि ॥३६६

गौतम ईसा के सरिस, कलि करुना अवतार।
भारत महँ गाँधी भये, मानवता बलिहार ॥३६७

गीता रामायन पढइ, होइ सदा कल्यान।
जोति अखंड हिये धरइ, करहिं कृपा भगवान ॥३६८

लाल बहादुर होइ गये, प्रिय भारत सन्तान।
गाँधी के पद चिन्ह चलि, जीवन कीन्ह महान ॥३६९

जय बिषपाई नाथ सिव, जन पै होहु दयाल।
तोहरी कृपा कटाच्छ ते को नहिं होत निहाल ॥३७०

सत्य नरायन ब्रत कथा सुनत सबहि सरधाल ।
कह महेस सत का गहे करत कृपा किरपाल ॥३७१

जात सुनइ ना ई कथा, दुष्टन्ह के सरदार ।
करत कबहुँ तकरीर ई, कबहुं करत तकरार ॥३७२

चाण्डि ओरिया दोख, सबहि कहउँ कलहइ जगत ।
समरथ माँगहिं भीख, सब ते सहज उपाय लखि ॥३७३

गीता रामायन पढइ, जीवन लेइ बनाइ ।
नाही तौ कलि श्रम वृथा, गरदभ ढोये जाइ ॥३७४

छाडत नाही कुटिलई कुकरम करत हजार ।
कह महेस कैसे मिलइ. सब जग सिरजनहार ॥३७५

नाहक तू आरसि लखहि, त्यागइ तन मन मैल ।
आरस त्यागे होइ सुख, सूझहि सदगुन गैल ॥३७६

धरम सास्त्र कै सुनब गुठि. पढबउ है भल भाइ ।
पै सुनि-पढि पै गुनहि तउ निज जिउ जरनि नसाइ ॥३७७

कहत सबहि तीरथ गये, आये मूँड मुडाइ ।
अहकार लाये सिरहि, यह तौ बडी बलाइ ॥३७८

अहंकार त्यागन करइ, मन कहँ लेइ मनाइ ।
कह महेस सतगुरु मिले, नित गृह गंग नहाइ ॥३७९

चाहत नित जेहिकै कृपा, सिवहु महा मतिमान ।
अन्नपूरना मातु मोहि, देहु बुद्धि बरदान ॥३८०

काहे कह कोहे अहहु, नाथ सुरज भगवान ।
रामप्रियासुत दीन अति, देहु दया कै दान ॥३८१

नित महिमा गावत रहत, जेहिकै सब संसार ।
जन महेस तेहिकै सरन काटहि कष्ट कगार ॥३८२

चारि दिवस कै चाँदनी, फेरि अँधेरहि पाख।
एहिते नीयत नीकि रख, मेट न आपनि साख॥३८३

सहसबाहु दसमुख सबहि गये काल के गाल।
एहिते सुभ करि प्रभुहि भज जे कालहु के काल॥३८४

द्रुपदसुता नाही रही, नहि दुरजोधन राज।
एक गरब के कारने हँसी महेस समाज॥३८५

आज गरब महँ फूलि कइ चाहत नाहि नियाउ।
धन धरनी केहि संग गये कह महेस भल भाउ॥३८६

दसबदनहु नाही रहे, नाहि हजारी बाहु।
ऐसी करनी ना करहु जेहिते पुनि पछिताहु॥३८७

खेती तौ भगवान कै, तू नहकहि मदमत्त।
कह महेस उचितहि करइ, कबहुँ न छाडइ सत्त॥३८८

कोहू के सँग ना गये, धन धरती सुख साज।
मन महेस मानइ कहा, गये राज महराज॥३८९

लिखब पढब कै श्रम वृथा जौ नाही सत भाव।
घूस-पात ते घर भरइ, पाछे लागइ लाव॥३९०

सीधे साँचे नरन कै ग्रीव रहा तू काटि।
एक दिवस आये दुखद, परे बज्र सिर फाटि॥३९१

सोचि-समुझि कइ करम कर, कबहुँ न आवइ आँच।
जन महेस हरि सरन गहु, करम बचन मन साँच॥३९२

दूध दहिउ कै सरित नित, बहत रही जेहि देस।
तेहि भारत कै दुर्दसा लखि कइ होत कलेस॥३९३

कहत साँच का आँच नहि, पै दुर्गति चहुँ ओर।
साँचन्ह कोउ पूछत नही, मजा उडावत चोर॥३९४

जौ कारी करतूति करि चाहत जस सुख चैन।
तौ पाछे पछिनाइहहि जागत जाये रैन ॥३९५

बिद्या बल पूछहिं नहीं, सबहि चहहि उतकोच।
नैतिकता चिन्तित परम, मन महेस अति सोच ॥३९६

चातक कइ उपदेस यह, चाहिअ प्रेम अनन्य।
अन्तहुँ लौ लागी रहइ, जन महेस अति धन्य ॥३९७

चातक सुन्दरि सीख, जन महेस धारे रहइ।
अनत न माँगहि भीख, भली भूख भल मरन अउ ॥३९८

बन्धु कबहुँ ना चित धरउ, सपनेउ महँ अहकार।
बन्दीसुत कै बात बुत बाँधउ गाँठि हजार ॥३९९

आयु गई बहु बीति, अब तौ प्रभु सुमिरन करइ।
छूटि जाइ भवभीति, निर्मल होइ जग महँ बिचर ॥४००

खेती देखि गरब करहि, मुड्ढ किसान गँवार।
ना जानति परि जाइ कब, पाला पाथर हार ॥४०१

सहसबाहु रावन करन दुरजोधन अस बीर।
काल कलेवा होइ गये जन महेस जस खीर ॥४०२

करत रहत उतपात नित, जेहि धन धरती हेत।
कोहू के सँग ना गये, कह महेस नर चेत ॥४०३

मोह अनल जे जरि रहे, करहिं न तनिक बिचार।
कह महेस तिन्ह पर परी, काल बली कै मार ॥४०४

गरब न कोहू कै रहा, चले गये नृप बीर।
नीति नाहिं कबहूँ तजइ, नस्वर सकल सरीर ॥४०५

जरासन्ध रावन नये, राजन के सिर ताज।
मूरी कौने खेत कै, गरब करत खल आज ॥४०६

अरे वैमनस ना करहि. करहि त्याग गहि नीति ।
अमर न कोऊ जग रहहि, कह महेस परतीति ॥४०७

चाकर होउ रघुनाथ के मन दुराव मँह त्याग ।
जन महेस परहित करहि होइ अचल अनुराग ॥४०८

दास महेस उदास अब, देखि जगत व्यवहार ।
रीति प्रीति परतीति नहिं, स्वारथरत संसार ॥४०९

पाप कमाई खाइ कर मन मानत आनन्द ।
कोऊ ना सब दिन रहे परा काल कै फन्द ॥४१०

गागर नागर ते कहहि, नस्वर अधम सरीर ।
रहहु सदा परहित निरत मेटहु दुखिअन्ह पीर ॥४११

खेलत लरिकाई गई जोबन गवा बिलास ।
अब चेतहु हरि कह भजहु, रहि सन्तन्ह के पास ॥४१२

करहु चाकरी राम कै, जेहिकै नाम सुधाम ।
जेहिते सबरी गीध तरि पहुँचे सुठि हरि धाम ॥४१३

देखि जगत भूलहु नहीं, करम करहु निहकाम ।
जन महेस सुख होत है लीन्हे ते हरि नाम ॥४१४

कुछ जिन्हते ना होइ सकइ आलसि सुद्ध महान ।
ते परनिन्दा रत रहत, द्विज महेस अनुमान ॥४१५

पैसा पाइ न करहु तुम्ह, सपनेहु महँ अभिमान ।
यह सम्पति दिन चारि कै, कहत महेस सुजान ॥४१६

कुटिल कीट कृमि हू भले, करहि न बड उतपात ।
पै महेस मानुष अधम, करहि घात प्रतिघात ॥४१७

धनि धनि भोलानाथ सिव, करुना के आगार ।
कालकूट बिषहू पियेउ, चित धरि पर उपकार ॥४१८

यह मम हिन्दुस्थान, महादेव परिवार मम ।
जहँ सबकै कल्यान, धन्य अनोखी एकता ॥४१९

जो सुत सब बिधि हीन, तापर होत दया अधिक ।
द्विज महेस सुत दीन, दया दीठि कीजिअ जननि ॥४२०

ब्रह्म एक बहु रूप, व्यापि रहे सब घटन्ह महँ ।
लीला अमित अनूप, कह महेस सब कहँ सुखद ॥४२१

सबहि परम प्रिय राम, उन्हहू कै बनबास भा ।
द्विज महेस बिधि बाम, सब कहँ देत अपार दुख ॥४२२

देखि न कीजिअ भूल, ई पलास पुहुपन्ह सरिस ।
बिनु सुगन्ध के फूल, देखन महँ नीके लगहिं ॥४२३

इन्हहिं न कर परतीत, जौ महेस मानइ कहा ।
उप्पर ते मनु मीत, हिये हलाहल बिष भरे ॥४२४

इन्हहि न सन्त सुहात, ई निसि दिन निन्दा करहिं ।
जैसे चाँदनि रात, चोरन्ह कहँ भावइ नहीं ॥४२५

मोहि सदा यह सोच, ई मानहिं नाहीं कहा ।
अवसि लगावहि खोच, भले काम भावहिं नहीं ॥४२६

लाख टका कै बात, परम मीत मोहिते सुनउ ।
दुष्ट नहीं पतियात, कोटि जतन कोऊ करइ ॥४२७

गरभबास के समय पइ, रहे जो सदा सहाइ ।
जननी अरु हरि सम हितू जग नहिं कोउ लखाइ ॥४२८

माता गायत्री सरन, सब बिधि कर कल्यान ।
द्विज महेस चिन्ताहरन, महामन्त्र जग जान ॥४२९

जेहि बिधि कै सुख होत है, माता केरी गोद ।
भोले सिव किरपा भये, तस महेस मन मोद ॥४३०

यह मरिट्ठ गुरु मन्त्र, तात जाप प्रतिदिन करहि।
बिचरहि सदा सुतन्त्र, माता गायत्रिहि कृपा ।।४३१

नाही भूत पिसाच, निअरे कबहुँ आवही।
महामन्त्र बल साँच, जाके हिय महँ रहहि नित ।।४३२

जनम अकारथ जात, एहिते करहि उपाउ अब।
मातु सरन गहु तात, बेद जननि सम को हितू ।।४३३

माता कै छाया रहे, बालक रहइ सुतन्त्र।
एहिते नित सुमिरन करइ, नित गायत्री मंत्र ।।४३४

जब लग मन महँ मैल अति, सूझइ नहिं भल भाइ।
एहिते मन कहँ सुच्छ कर, जेहिते सत्य समाइ ।।४३५

धूर्त धतूर पुहुप सरिस, गन्ध रहित तन सेत।
ई बस विषफल देत है, रहइ महेस सचेत ।।४३६

काह करइ बिकराल कलि जौ नर चतुर सयान।
जग जननी कै सरन गहि करम करइ धरि ध्यान ।।४३७

माटी कै घट नीक अति, कर पर हित जल दान।
सुबरन घट केहि काम कै, छूछइ धरा मकान ।।४३८

सो सुबरन केहि काम कै जुद्ध करावइ रोज।
द्विज महेस उपजइ सुमति, तेहिकै कीजिअ खोज ।।४३९

जो एहि रचना मिलइ भल, सो सब मातु प्रसाद।
सेस सकल त्यागब उचित, जेहिते मिटइ बिषाद ।।४४०

देखन महँ सुन्दर लगहि, फरहिं न एकहु बार।
कह महेस अस तरुन्ह ते होत न पर उपकार ।।४४१

पैना ते ई डरत हैं, पै ना करहिं बिचार।
कह महेस अस बरधनहि, पैनै भल उपचार ।।४४२

जननि जनक भ्राता भगिनि सुत दुहिता तुम्ह सर्व
दया दीठि कीजिअ जननि, भजन करउँ तजि गर्व ॥४४३

जननि सरिस कोऊ नही, सुत हित परम उदार।
द्विज महेस एहिते गहहि, मातु सरन सुख सार ॥४४४

गंगा मैया विनय मम, राखहु अपने नेर।
जन महेस दरसन करइ, छूटहि पाप घनेर ॥४४५

आयु बहुत बीती जननि, अब रह थोरी सेस।
जन महेस पर करि कृपा, मेटहु सकल कलेस ॥४४६

एक ब्रह्म के रूप बहु, जेहि जो भावइ लेइ।
करइ विनयजुत वन्दगी, दुरित सकल दहि देइ ॥४४७

बचपन खेले खेल बहु, गुच्चुक भौंरा भौर।
सँकरी सौतेलवा सग्ल, मुरवग्घी सुर और ॥४४८

खेल उजेरिया डुभुक महँ, एत्ता - एत्ता पानि।
एक कहे बोलहिं सबहि लरिका घग्घौ रानि ॥४४९

खेल पकिल्हौं बिरिछ पै खेलत बाल समुदाइ।
अंडी मारहिं मेड पै बोलहिं झाबरि आइ ॥४५०

ढेला लहि मारइ जबहि जन महेस धनवास।
उडहिं चिरइया खेत की, भागहिं बाँदर खास ॥४५१

गाँवन वसरी हरहनहि, लागे ते भल भाइ।
अठएँ-दसएँ दिन परहि, पसुचारन सुखदाइ ॥४५२

जंगल सेमरा के रहे, भेडहा भीड सिआर।
जात अकेले भय लगइ, अब सुल भवा खेतार ॥४५३

महादेव भाई भले अउर सुबन्ना नाउ।
गुडिअन्ह महँ कूदहिं कलित, रहे अखाड़ा गाँउ ॥४५४

अब तउ अस लरिका लखउ, खेल ते जैसे वैर।
झाडे सैकिल पर चलहिं, कहहिं होत है देर ॥४५५

अब अकासवानी अइसि, गावहि गीत भदेस।
तिन्हहिं सुनहि बालक बधू, बनहि चरित कस देस ॥४५६

आज सिनेमा महँ हुअत, अकसर नगा नाच।
मालिक के मन एक बम, धनहि न आवइ आँच ॥४५७

माई मामा रामरँग, माते रामहि रग।
कथा भागवत सुनहि तौ पुलकहि सहित उमंग ॥४५८

जननि गई सुरधाम कहँ, चकित महेस बिचारि।
मोहन नानहु चलि बसे, नानिहु गई सिधारि ॥४५९

आजी रामदुलारि मम, तीरथ ब्रत नित नेह।
राम पिआरी मम जननि, जिन्हते हरषित गेह ॥४६०

मम जननी मम जननि सुख, मिलहि सबहि जग माँहि।
माढी नैनू देहिं भल, सुत सगरे नित खाहिं ॥४६१

घिउ महेस खायउ बहुत, निज जननी के राज।
अब तौ दुर्लभ दालदउ, सुद्ध कहत बड लाज ॥४६२

सिवगढ महँ नामी भये, बरखडी महराज।
तिन्हके बिद्यापीठ महँ, पढ महेस द्विजराज ॥४६३

नृपति रनजय सरल हिअ, सुलतापुर कै आस।
करत बतकही जन सबहि, भूपति भवन निवास ॥४६४

याहि अमेठी राजकुल, भई सती महरानि।
जिन्हकै कल कीरति कलित, मानहु देवि भवानि ॥४६५

हिअइँ जायसी होइ गये, मलिक मुहम्मद नाउ।
रामनगर के उतर दिसि, ऊँचि समाधि सुभाउ ॥४६६

औधूतन्ह कह कह कही, उन्हकै चरित अनूप।
अनायास दरसन दिअइँ, रंचहि करहि सुभूप ॥४६७

कोऊ कह बरवस दिअइँ, धन धरती सम मान।
जन महेस कहँ ऊँच पद, जोगी जती समान ॥४६८

अवढर दानी सिव सदय, सब अभिमत दातार।
बँगरा पहुँचि निचावडी, दरसन करइ उदार ॥४६९

जानि सकिनि नहिं आज लगि, केहि करमन्ह परिनाम।
अनचाहे परबत मिला, मिला न कबहु सुधाम ॥४७०

माता गायत्री सुनउ, देउ सुखद असथान।
जहाँ धरम धन बुधि बढ़इ, मिलइ सुजस सन्मान ॥४७१

उअत जबहि दिननाह, घटत तबहि तम तोम जग।
भये मडारीसाह, जिन्हते भा कल्यान बहु ॥४७२

लौ लागी भगवान मे छूटि गवा घर गाँव।
बम मडार पर ध्यानरत, बैठे बिरवन्ह छाँव ॥४७३

कलुप जात सब धोइ, जौ महेस नित रगर कर।
मातु दयहि सुख होइ, नित प्रति जननिहि ध्यान धर ॥४७४

जननिहि के सब रूप, नाम लेइ भावइ जउन।
एकहि ब्रह्म सरूप, द्विज महेस ब्यापित जगन ॥४७५

लरिकन्ह कै कुछ बात नहिं, बूढे बैठि बजार।
करहि बतकही बेतुकी, मुँह महेस लाचार ॥४७६

कोहू कै सुनि कइ बढब, इन्हहि न तनिउ सुहाइ।
बस बैठे बक-बक करहिं, कोसहिं करम अघाइ ॥४७७

एक दुष्ट के कारने, अनरथ होत महान।
सुहृद बचन मानहि नही, कुरुपति अति अभिमान ॥४७८

सभय सक्ति पहिचानि कइ करइ पते कै बात
काम बनइ चिन्ता मिटइ, नहिं महेस पछितात ॥४७९

लाखन चूहा खाइ कइ, चली बिलारि नहाइ।
राही बिलुका देखि कइ, बार-बार ललचाइ ॥४८०

जौ तुम्ह कह अति गरब मन, ऊँच कुलहि अभिमान।
तौ नीकी करनी करउ, कह महेस अति मान ॥४८१

जौन जबहि आई उमँग, तौन लिखा इन्ह दोह।
कह महेस अपने नरे अवधी भाषा सोह ॥४८२

नागर जन सीखहिं सुमति, अवधी ललित ललाम।
रामचरित मानस पढहिं, पदमावत अभिराम ॥४८३

ते पुनि कबहूँ मन चले, पढहिं सतसई येह।
कह महेस बोलिहिं विमल बाढइ नित नव नेह ॥४८४

मात पिता अग्रज गुरु विद्यागुरु चटसार।
गायत्री गुरु ग्यान रवि मेटत तम ससार ॥४८५

गुरु श्रीरामहि ध्यान धरि, पुनि करि सभु सनेह।
करहि लोकहित काम सब, पाइ महेस सुदेह ॥४८६

सोधु करत जिन्ह पै परम सरल सुमति लोकेस।
तिन्ह गुरु श्री श्रीरामपद प्रतिदिन नमत महेस ॥४८७

रसिकन्ह मन जौ तोषु, एहि रचना ते कुछ मिलइ।
होइ परम सन्तोषु, एहि महेस लघु कबि हृदय ॥४८८

जस कुछ हम्हते बनि परा, सरसुति सेवा कीन्ह।
जन महेस मिस सतसईहि बिजय-पर्ब सुख लीन्ह ॥४८९

दसरथ दसमुख नाम दुइ, जग कह करत सचेत।
दस इन्द्रिन्ह कहँ बस करहि, करहि राम ते हेत ॥४९०

सुअन परसु धनु राम से पालहिं पितु-गुरु बैन ।
जुग-जुग कल कीरति रहइ, कह महेस सुख दैन ॥४६१

माता कौसिल्या सरिस मिलहिं महेस सुभाइ ।
देहि सीख सुन्दरि सुतहि, नाम रहइ जग छाइ ॥४६२

लखन भरत से भ्रात जग करत परम उपकार ।
रामचरन दिढ प्रीति करि हरत महेस बिकार ॥४६३

माला फेरइ नीकि बिधि, जेहिते मन फिरि जाइ ।
सतमारग त्यागइ नही, जन महेस भल भाइ ॥ ४६४

साधुन्ह निन्दा ना करउ, साधु बडे जग माहि ।
धरमराज के जग्य महँ, घंटा बाजा नाहिं ॥४६५

अइसी ओइसी दउरि कइ झगडू पावहिं मान ।
पै बुद्धू बइठे रहहिं अकड़ू बनि निज सान ॥४६६

करइ कोटि बिधि चतुरई, बनइ न एकउ काम ।
होइ कृपानिधि कै कृपा, पूरहिं काम तमाम ॥४६७

ऊँच भये नइ कइ चलइ, कबहुँ न लागइ चोट ।
मोट होइ सधि कइ हलइ, कबहुँ न फाटइ कोट ॥४६८

सकल चतुरता छाँड़ि कइ रहइ सदा मन साँच ।
कह महेस ऐसे जनन्ह कबहुँ न आवइ आँच ॥४६९

तुम्ह प्रभु ऐसे होइ रहे जस गुलरी कै फूल ।
देखि नही कबहूँ परत, का महेस भइ भूल ॥५००

आखर भल तब्बहि लिखहि, लीजिअ जब खुब सोचि ।
नही हँसी जग होत है, दस दिसि कोचाकोचि ॥५०१

लेबे कहँ सब कुछ मुदा देबे कहं कुछ नाहि ।
ऐसे कौवा नरन्ह कह लखि महेस मुसुकाहिं ॥५०२

घर मह मूसक डड नित पेलहि दिन अरु रात।
पै महेश अकडे रहहि, कहहुँ न सान अमात ॥५०३

सरद पुन्नवासी भली, सब कोहू सुख होत।
लहि महेस लछिमी कृपा, बाढ़इ हरि से हेत ॥५०४

ऐसे सन्तन्ह के हृदय, बसहि सदा भगवान।
जे निछल निर्मल मनहि करहि राम कै ध्यान ॥५०५

निर्मल हिरदयँ हरि बसहि, होइ जोति परकास।
कह महेस मृङहि सगुन, सतगुन करहि निवास ॥५०६

आरस तनिकहि के भये, गुर गोबर होइ जात।
कह महेस ऐसे मनुज, पाछे कहँ पछितात ॥५०७

सूती घोघा हू भले, जे आवहि कुछ काम।
पाँव मेहाउर देत एक, एक काजर अभिराम ॥५०८

मधुकर! तुम्ह कारे बदन, मनहु केरि तुम्ह कारि।
एक सुमन कहँ छाँड़ि कइ, भ्रमहु डारि ते डारि ॥५०९

तजहु मोह मद आइ जग, हरि चरनन्ह गहि लेहु।
करहु सुफल मानुष जनम, जन महेस नव नेहु ॥५१०

तुम्ह हरि माई बाप, हम्ह तुम्हरे चरनन्ह परी।
छिमा करहु मम पाप, जनम अकारथ जाइ नहि ॥५११

परबरजा लीन्ही ललकि पर बरजा मन नाहि।
पारब्रह्म कैसे मिलइ, कह महेस मन माहि ॥५१२

एक दिअहि उजिआर घर, तैसे एक सपूत।
काह भये धृतराष्ट्र के एक सौ कूर कपूत ॥५१३

काहे माते अरसई, भये भूमि के भार।
तनिक करहि भलमनमई, उतरहि बेडा पार ॥५१४

माता गायत्री सुभा, पिता जग्य भगवान।
कुल देवता सिव सरन गहु, लहु महेस कल्यान ॥५१५

महामन्त्र माला जपइ, करइ जग्य निहकाम।
आसुतोष दरसन करइ, लहइ सदा मन काम ॥५१६

संस्कृत के पंडित रहे, भाषा रचना कीन्ह।
एहिते तुलसीदास तेहि, संस्कृतजुत करि दीन्ह ॥५१७

गाँवन्ह महँ घूमत रहे, साधु फकीरन्ह संग।
मलिक मुहम्मद जायसिहि, ठेठ अवध कै रंग ॥५१८

काहे कहु अहमक बनत, करत न नेकु विचार।
सब सुत एकहि मातु के, नाहक लड़त गँवार ॥५१९

नकल किहे ते घटत है अकल, सुनहु मम भ्रात।
आलस बाढ़त दिवस-निसि, बुद्धि बिलायत जात ॥५२०

विद्या लाभ चहहु जदी, करहु परिश्रम बन्धु।
नाही झूठी सनद लहि, पार न पइहहु सिन्धु ॥५२१

अति अगाध भवसिन्धु जौ, पावन चाहहु थाह।
तौ करनी ऐसी करहु, करहि राम परवाह ॥५२२

अति अचरज हम्ह कह भवा, देखि जगत कै रीति।
जे साँचे सीधे चलहिं, तिन्हहि देइ जग भीति ॥५२३

माटी केरी गागरी, काहे बहु इतराइ।
विपति काँकरी के परे, टूक टूक होइ जाइ ॥५२४

कारी-कारी कोकिला, सबके मन बहु भाइ।
उज्जर तन बक अति कुटिल, गारी पाइ अघाइ ॥५२५

एक लँगोटी पहिरि जग, साधु पुजावत पाइँ।
मदमत नृप अति कुटिल होइ, प्रतिदिन गारी खाइँ ॥५२६

आसा आसा कह करइ, आसा बुरी बलाइ।
राजा रंक सबहि ग्रसे, जग महँ होत हँसाइ ॥५२७

दीनबन्धु दारिद हरन, भंजन भव दुख भार।
करिअ कृपा दारिद दरिअ, भंजिअ दुक्ख पहार ॥५२८

आरत भारत देखि कै, हरि जू होहु दयाल।
सुख सान्ती सब जन लहहिं, कबहुँ न परइ अकाल ॥५२९

सुन्दरता सम्पति सुअन, तिय तनया तरुनाइ।
सखा बन्धु नीके मिलहिं, तन तरुवर हरयाइ ॥५३०

तौ लौ नीके सब अहहिं, जौ लौं परइ न काम।
परे सहायक होइ जो, सोई बन्धु ललाम ॥५३१

मानव दानव होइ रहा, चलइ राछसी चाल।
चारि दिवस ऊधम करइ, पाछे हाल बेहाल ॥५३२

चाहहु सारे हिन्द महँ, एकहि भाव सनेह।
तौ हिन्दी कै पढब भल, सब सुख भारत गेह ॥५३३

श्रेय पथिक कोऊ मिलहिं, देखहु नैन पसारि।
प्रेय पथिक कै झुड बड, भेडिन्ह कै जस नारि ॥५३४

चाहत अपने लरिकनहिं, कैसेहु होवहिं पास।
चाहे पढ़हिं न आखरहिं, नकलहि पर बिस्वास ॥५३५

क्रोध करे सकती घटहि, अनरथहू होइ जात।
जे नर क्रोधहिं करहिं बस, ते समरथ ठहरात ॥५३६

क्रोध समर आँगन करइ, जहाँ देस कै आन।
नाहक क्रोध गँवारपन, कह महेस मति मान ॥५३७

नारी कै सम्मान करि, लहत बड़ाई लोग।
सुखी होत परिवार सब, नहिं भय रोग न सोग ॥५३८

जो जैसन के संग रहहि, सो तैसहि होइ जाइ ।
भृङ्ग कीट के न्याय सम, जगती माहिं लखाइ ॥५३९

सहस्रबाहु दससीस गे, खाली हाथ पसारि ।
या ते माया मोह तजि, करइ न नारक रारि ॥५४०

जौ चाहहु सुख जगत महँ, धरहु धीर सन्तोष ।
करहु नीक व्यवहार अरु मेटहु आपन्ह रोष ॥५४१

आवत हरषत लोग सब, जात सबहि दुखिआत ।
याही जग कै रीति कह, जन महेस बतरात ॥५४२

अस कबिता केहि काम कै, जाते हित नहि होइ ।
कह महेस कविता वहहि, जाहि सुनइ सब कोइ ॥५४३

चार दिनन्ह कै चाँदनी, फिर अँधियारहि पाख ।
एहिते अस करनी करइ, गिरइ न आपनि साख ॥५४४

तुम्ह नइहर बनि ठनि रही, पिया बसे निज देस ।
कुछ ऐसी करनी करउ, प्रीतम मिलहिं महेस ॥५४५

चलउ चाल सीधी सधी, जेहिते गिरब न होइ ।
पिया मिलन हित हे सखी, चादर डारउ धोइ ॥५४६

कोटि जतन करि मैं थकी, पिया मिले नहि मोहिं ।
कह महेस मन मैल तज, मिलहिं पिया तब तोहिं ॥५४७

पायक हम्ह श्रीराम के, गायत्री मम माइ ।
सिव भोले कुलदेवता, जन महेस सुखदाइ ॥५४८

तिलक मन्दरा कह दिए, कंठी पहिरे काह ।
जब लग निज मन मैल अति, मिलइ न हरि कै राह । ५४९

फूले-फूले जो फिरहिं, ठग ठाकुर अरु सन्त ।
मन महेस मल के रहे, नाहिं मिलहिं भगवन्त ॥५५०

सेवा ते मेवा मिलहिं, चटुकारी ते चाट।
एहिते सेवा है भली, हरि जोहहिं नित बाट ॥५५१

सन्तन्ह कै संगति करइ, मोट-झोट नित खाइ।
कह महेस हरि दरस हित, यह एक सहज उपाइ ॥५५२

करहिं चाकरी रहहिं दृढ़, हरहिं दुखी कै पीर।
ते सुख भाजन जगत महँ, कीरति गावहि भीर ॥५५३

आज सबहि याहहि कहत, सिच्छा भइ बरबाद।
छात्र न कच्छा महँ रहहिं, घर पर करहिं न याद ॥५५४

चरन चापि चाहत चढन, ई उन्नति के सीस।
निज पौरुष भूले फिरत, काढत जहँ-तहँ खीस ॥५५५

नकल करत झिझकत रहे, पहिले के सब बाल।
अब तौ निधरक होइ करत, धन्य बाल धनि काल ॥५५६

कहत कि हिन्दी को पढ़इ, सहजहि होबइ पास।
पर परचा पावत जबहि, होत महेस उदास ॥५५७

दक्खिन भारत के पढत, हिन्दी कहँ अति चाव।
पै उत्तर के बाल ई तजत न कुटिल सुभाव ॥५५८

यह कलिकाल कराल, करउ जुगुति तौ तरउ भव।
जैसे तरत मराल, वैसे भव बारिधि तरउ ॥५५६

मूँड मुडाए होत कह, जब लग मन महँ खोट।
कह महेस छोडउ कुमति करि खल दल पर चोट ॥५६०

साधुन्ह कै सम्मान करि, करउ सबन्ह कै भोज।
एहिते सुख सम्पति बढ़इ, बाढ़इ तन मन ओज ॥५६१

जतन कीन्ह हम्हहू मुला, पावा ना अनुदान।
जेहिकै कोऊ ना हुआँ, देइ न कोऊ ध्यान ॥५६२

कीन्हि नही चटुकारिता, रहिनि करम महँ लीन ।
मोहि सफलता ना मिली, एहिते बदन मलीन ।।५६३

सरसुति रवितनया सहित, गंगा परम सुहाहि ।
तिरबेनी सेवा किहे, पाप-पुंज मिटि जाहि ।।५६४

सुमति कुमति दोऊ खड़ी, करहि बतकही लोग ।
कह महेस पहिलिहि गहे, सुख समरिधि के जोग ।।५६५

सान्तिकुज महँ रहि रहे, श्रुतिमूरति श्रीराम ।
जन महेस तिन्हके बचन, अमरितमय अभिराम ।।५६६

जुग निरमानी जोजना, जैसे गंगा नीर ।
सब जग के कल्यान हित, सेवारत गंभीर ।।५६७

लरिकन्ह सँग लरिका बनउ, बनउ बूढ सँग बूढ ।
जन महेस सुभ आचरउ, सरल सुबोध निगूढ ।।५६८

माता जू ममतामई, रामपिआरी नाउँ ।
दीनबन्धु मम बाप बुत बन्दीदीन लिखाउँ ।।५६९

बिसुन महेस अनन्द अरु ओम सुसील सुभाइ ।
चिदवल्ली निज गाँव महँ बचपन दीन्ह बिताइ ।।५७०

पढ़ि लिखि कइ सब काम ते अपने अपने लागि ।
एक फौजी दुइ गुरु भये दुइ डाक्टरि अनुरागि ।।५७१

गुरु महेस अरु डाक्टर बिद्यामंदिर केरि ।
गाँवन्ह केरी गउनइन्ह राखा बहुतहि हेरि ।।५७२

लछिमी सिव कइ भइ दया, लाग गंग ते हेत ।
इसवी उनिस पचासि महँ, कीन्ह प्रयाग निकेत ।।५७३

आज नकल बिन कल नहीं, कल के नही खिआल ।
सकल बनाये फिरत ई, अकल भई बेहाल ।।५७४

गुरु परचा बनवहिं सरल, इन्ह कह गरल समान ।
पढन लिखत कबहूँ नही, परची के बलवान ।।५७५

पढन चहत लरिका नही, मिच्छक देत न ध्यान ।
रोगी कह जौनहि रुचहि, बैद कहहिं अनुपान ।।५७६

चारि पहर चौमठ घरी, नकलहि कै बस ध्यान ।
दरजा महँ मन ना लगहिं, काह करइ गुरु ग्यान ।।५७७

कचन कामिनि ना तजइ, तजइ लोभ अरु मोह ।
कह महेस उत्तम गृही, तजइ काम अरु कोह ।।५७८

चोरी-चोरी छिपि रहे, चोरन्ह के सिरताज ।
पाप पुंज चोरी करहु, कह महेस तजि लाज ।।५७९

करै काज हरि ध्यान कइ, त्यागै तम अग्यान ।
कह महेस भवनिधि तरै, होइ जगत कल्यान ।।५८०

नौ रस सब फीके लगहिं, जहाँ भगति रस मान ।
हरि नीके रीझहिं तबहिं, जबहि होइ गुन गान ।।५८१

अदभुत अमल अनूप गायत्री जप जग्य सुभ ।
श्रीहरि धारहिं रूप सकल सृष्टि सुख देन हित ।।५८२

जिन्ह सुमिरन सुभ सोह गनपति गौरि कृपायतन ।
करहि कृपा करि छोह पावउँ प्रभु पद प्रीति अति ।।५८३

खलगन संगति बारुनी कबहुँ न कीजिअ संग ।
कह बुधजन ब्यापहि तनहिं वृस्चिक बिष जिमि अंग ।।५८४

राम नाम अउ हरि कथा सुर तरु मंगल खानि ।
नित महेस सुमरन करहि कहहि जोरि जुग पानि ।।५८५

अवधपुरी महिमा अमित जहाँ बसहिं रघुबंस ।
उत्तर दिसि सरजू सरित सब जन करहिं प्रसंस ।।५८६

धन्य - धन्य कौसलपुरी धन्य - धन्य अवधेस ।
धन्य- धन्य प्रमुदित प्रजा पुलकित परम महेस ॥५८७

रघुबंसी भूपति भये एकते एक रनधीर ।
जिन्हते नित रच्छित प्रजा प्रेम पयोधि गंभीर ॥५८८

चिन्ता चित ब्यापहि जबहि मन अनमन होइ जाइ ।
कहत चिता ते यह बडी जीतइ जीवन्ह खाइ ॥५८९

मनहि होत जब हर्ष तब मुख-ससि सोभा बढत ।
लहि महेस उत्कर्ष को नहिं हरषित लखि परत ॥५९०

सन्तति दुख सालहि सबहि राजहि प्रजहि समान ।
कह महेस सतगुरु सरन होत सकल कल्यान ॥५९१

धरती धारहि सकल जन जस माता सन्तान ।
जन महेस गावहु गुनन्ह भारत मातु महान ॥५९२

जस-जस बाढ़हि गरभ नित तस-तस मुख पिअराइ ।
मनु सन्तति निज आगमनु सब कहुँ रही जनाइ ॥५९३

चौबीसी के सरल मुठि मनहु ललित कबिराइ ।
कह महेस आवहिं घरहि कहहिं कबित्त बनाइ ॥५९४

जिन्हके मानस महँ हुअत बिद्या भानु प्रकास ।
ग्यान कमल बिकसत लसत होत अबिद्या नास ॥५९५

उत्तम बिद्या के लहे होत बिबेक निवास ।
श्री सुख साधन सब बढत सब दिसि होत बिकास ॥५९६

अतिथिहि मानहिं देव सम सारे नर अउ नारि ।
ते तेहिकै सेवा करहिं निज संस्कृति अनुहारि ॥५९७

मोह सूलप्रद कहहिं बुध तजहिं अखिल अग्यान ।
पावहिं परमानन्द जन सत्य महेस महान ॥५९८

बिरवन्ह कै महिमा महा करहिं जे पर उपकार ।
ढीलहु मारे देहिं फल सुख सरसहि ससार ॥५९९

मंजुल मन्द बयारि हरहि थकावट पथिन्ह कै ।
मानहु सुन्दरि नारि कोमल कर बेनिया झलहि ॥६००

पूजहिं नित त्रिपुरारि करहिं जग्य पावन परम ।
जन महेस बलिहारि बिरले अस दम्पति जगत ॥६०१

अखिल बिस्व कल्यान हित होत जग्य अभिराम ।
लोक अउर परलोक दोउ बनत सुमंगल धाम ॥६०२

ग्रामगीत गावहिं ललित ललना सुठि सुकुमारि ।
जन गन मन प्रमुदित परम पुलकित सब नर नारि ॥६०३

गायत्री महिमा महा महा मन्त्र परभाव ।
एहिते एहि मंत्रहि जपत निर्मल होत सुभाव ॥६०४

बैवाहिक व्यवहार ते बाढत सहज सनेह ।
जस महेस पावस भये लखि सरसत महि मेह ॥६०५

स्वागत सरस सराहना सब कहु भावहि मित्त ।
कह महेस एहिते रहहि प्रमुदित प्रतिदिन चित्त ॥६०६

धन्य-धन्य महदेव तुम्हते जन पावहिं सुखहिं ।
करहिं भक्त जन सेव, एहि कारन श्रद्धा सहित ॥६०७

पसु पच्छिउ जानहिं जगत भला-बुरा व्यवहार ।
कबि महेस एहिते करहिं सज्जन भल आचार ॥६०८

गारी गारी नाहिं ते तौ सुमुखिन्ह मृदु बयन ।
जन महेस मुसुकाहिं देखहिं प्रीति कि रीति भलि ॥६०९

सार अउर बहनोइ कै मृदु मजुल व्यवहार ।
जीवन तरु सरसइ सहज सुखी रहइ परिवार ॥६१०

माता आसिरबाद सुभ सुत कर कर कल्यान ।
जन महेस एहिते करहिं सुदिन मातु गुन गान ॥६११

लखन लाल महिमा अमित सव सुख साधन ग्यान ।
मिलहि सुजस सुभगति सुमति करहि लोक गुनगान ॥६१२

गुरु महिमा को कहि सकहि एक मुख ते जग आइ ।
सहज बदन बरनन्ह करहिं तबहूँ नहिं कहि जाइ ॥६१३

निन्दा तौ तीखी असी करहि मरम पर घाव ।
जेहि सुनि जन ब्याकुल रहहिं फेरहिं सहज सुभाव ॥६१४

काम क्रोध अरु लोभ सग मोह महा बलवान ।
जिन्हते करहिं कुकर्म नर भूलहि आतम ग्यान ॥६१५

बिपति परे पर साथ रहि रहहिं कलेस महान ।
भरतखड की नारि सुठि चाहहिं पति कल्यान ॥६१६

जे बिचार नहिं करहिं कुछ तिन्हकै होइ हँसाइ ।
कह महेस पावहिं दुखहि गोइ न सकहि सिराइ ॥६१७

जननि जनक सेवा करइ धरइ ईस कै ध्यान ।
जन महेस पूजइ गुरुहि होइ सदा कल्यान ॥६१८

धन्य-धन्य भारत धरा धनि-धनि भारत नारि ।
जिन्ह कह मानहि सकल जग कहत महेस पुकारि ॥६१९

गुरु पुरजन पितु मातु प्रिय सुठि सुन्दर सुकुमार ।
जन महेस मानस बसहिं ऐसे राम उदार ॥६२०

धन्य-धन्य तमसा तटिनि जहँ सिय सह रघुबीर ।
सोये पुरबासिन्ह सहित सरल धीर गभीर ॥६२१

कन्द मूल फल खाइ नित रहहि प्रकृति के बीच ।
बनबासी साँचे सुमन मनहु नलिन सँग कीच ॥६२२

शृंगवेरपुर अति सुखद देवनगर सम सोह।
बापी कूप तड़ाग ध्वज राजभवन मन मोह ॥६२३

हित अनहित जानहि सबहि पसु पच्छी ससार।
कह महेस एहिते करहु कबहुं न दुर्व्यवहार ॥६२४

लोकगीत धुनि ललित अति तिन्ह मॉही जॅतसारि।
प्रातकाल पिसना पिसहि गाँवन्ह गाॅवहि नारि ॥६२५

गनपति गुन गावहि सबहि सुर अनादि जिय जानि।
जन महेस सुमिरन करहि सदा जोरि जुग पानि ॥६२६

एक ते एक नामी भये सबहि छेत्र के लोग।
तीरथपति महिमा महा नहिं दुख दारिद रोग ॥६२७

सब बिधि सब सिधि धाम तीरथराज प्रयाग सुठि।
त्रेता जुग महँ राम कीन्हि कृपा आवत भये ॥६२८

बातावरन प्रभाव सुभ जहाँ बसहि सुचि सन्त।
जन महेस पावहि सुफल होइ दुखन्ह कै अन्त ॥६२९

सबते बड सन्तोष धन धारिअ बन्धु सँभारि।
रहइ सदा हरषित हृदय कबहुं न बाढइ रारि ॥६३०

नाहिं करइ सन्तोष विद्या अर्जन जप जगिहिं।
काहुहि देइ न दोष अति बिचित्र बिधि कै बिधी ॥६३१

करु परिजन परितोष सुठि समाज सेवा सदा।
नाहिं करहि सन्तोष देसअरिन्ह दरिबे बरे ॥६३२

चित्रकूट महिमा महा सोभा सिन्धु अपार।
सेए सुख पावइ परम कहत महेस कुमार ॥६३३

चिन्ता चिता दुहून कै एकहि रासि मिलान।
चिता देह जारत मरे चिन्ता जीतहि जान ॥६३४

बिमल बंस रघुबंस सब सकल जगत बिख्यात ।
जहँ दिलीप रघु अज भये एक ते एक जलजात ॥६३५

आतम ना जनमहि मरहि भाखहिं जन मतिमान ।
मुल मूरुख मानहिं नही देखहि देह जहान ॥६३६

जग महँ रहइ सरोजवत माया रहित ललाम ।
सुत सम्पति संसार सुख भोगइ होइ निहकाम । ६३७

पिंजरा ते सुग्गा उडे पिंजरा होत बेकार ।
कह महेस मनई तनहु ऐसेहिं होत असार ॥६३८

धन्य-धन्य पावन धरा तीरथराज प्रयाग ।
जन महेस मंगल परम अघ अवगुन जहँ भाग ॥६३९

होहिं जगत एस भ्रात जैसे नृप दसरथ सुअन ।
सकल बिस्व बिख्यात भारतीय संस्कृति सुधा ॥६४०

बाढइ भ्रातन्ह प्रेम दिन दूना अउ चौगुना ।
कह महेस लहि नेम सकल सृष्टि सुख देन हित ॥६४१

पितरन्ह के प्रति सरधा होत जबहि अधिकाइ ।
श्रद्धांजलि तब देत जन कल कुल कीरति गाइ ॥६४२

सब भ्राता सुख ते रहहिं कौनहु दुख नहिं होइ ।
भगिनिन्ह भगिनिन्ह नेह लखि जगत प्रसंसहि सोइ ॥६४३

काम क्रोध बस जन करहिं सुजनन्ह कै अपकार ।
कह महेस पछिताहिं ते मूरुख मन्द लबार ॥६४४

सत्य अहिंसा जग्य जप बेद पाठ अरु दान ।
मातु पिता गुरु बचन करि लहहिं सुजस बुधिमान ॥६४५

पाँच तत्त कै मेल मुल एहि महँ नहिं तत्त कुछ ।
चारि दिनन्ह कै खेल खेलहिं नर नारी सबहि ॥६४६

नन्दिग्राम धनि ग्राम जहाँ रहे अनुपम भरत।
सत्र विधि ते सुख धाम देव सुमन बरषे हरषि ॥६४७

लखन राम अरु सीय चित्रकूट महँ रमि रहे।
सोभा अति कमनीय को कबि बरनन करि सकहिं ॥६४८

बरधा रानी मन मुदित देखि देखि निज राज।
जिमि गाँवन्ह की नवबन्धू निरखि-निरखि निज साज ॥६४९

लखन राम वैदेहि मिलि रोपहिं बिरव बिसेष।
सुमन लगावहिं बिबिध बिधि हरषित मगन महेस ॥६५०

आइ अमावस राति गनपति लछिमिहिं पूजि कइ।
धरी दीपकन्ह पाँति बाल जुवा हरषित सबहि ॥६५१

घर-घर दीपन्ह जोति जगमग-जगमग जग करहिं।
मानहु सब कहुँ ज्योति बिस्व कुटुँब एक होइ रहहिं ॥६५२

सब भाषन्ह महँ एक प्रमुख बहुत जनन्ह कै बानि।
कहत राष्ट्रभाषा सुजन पढत बखानि-बखानि ॥६५३

सकल राष्ट्र गठबन्धन करत एक यह डोरि।
सब बहिनिन्ह लइ भेंटत प्रेम सुधा सुठि घोरि ॥६५४

पञ्चबटी अति धन्य राम कीन्ह जहँ बास सुठि।
बाढइ भगति अनन्य जन महेस सुमिरन किहे ॥६५५

लखन सीय अरु राम पंचबटी महँ रमि रहे।
सोभा अति अभिराम ग्यान भगति बैराग्य मनु ॥६५६

धन्य-धन्य अरबिन्द साबित्री जिन्ह रचि दिहेउ।
कह महेस मतिमन्द कामाइनि सम काव्य सुठि ॥६५७

जेठ सुकुल दसमी भये मंगल उत्सव होइ।
गायत्री गंगा जनम कहहिं बुद्धजन सोइ ॥६५८

बेलपत्र जल बैरि सबहि चढावहिं सिवहिं सुचि ।
भवसागर कहँ पैरि जाहिं सत्य जन मुदित मन ॥६५९

नर नारी मिलि कइ रहहिं करहिं काम निहकाम ।
चारि पदारथ जग लहहिं होइ जगत सुखधाम ॥६६०

दुष्टन्ह तेनी उचित नहि हास अउर परिहास ।
ते समुझहिं कुछ अउर तेहि होइ हास निरहास ॥६६१

राष्ट्र प्रेम जौ होत सब जन एक भाषा पढ़त ।
भागिहु होत उदोत सम्मानहु जग महँ बढ़त ॥६६२

क्रोधहि कुछ सूझत नहीं समुझावइ बरु कोउ ।
कह महेस एहिते सुजन क्रोधहि बस जिन होउ ॥६६३

सीताराम चरित सुनहि जपहि महागुरुमन्त्र ।
जन महेस सत आचरहि श्री पावहि सुभतन्त्र ॥६६४

हरिजन हरि हनुमान कृपासिन्धु करुनायतन ।
जन महेस कल्यान करहु नाथ जन जानि जिय ॥६६५

अरि ते बढ़ि कइ जाति जन मन महँ मानहिं द्वेष ।
एहिते इन्हते बचि रहइ नाहक देत कलेस ॥६६६

नास समय आवत जबहि होति बुद्धि बिपरीत ।
एहिते जन अनुचित करत देखत सब्र न मीत ॥६६७

धन्य-धन्य श्रीराम धन्य बिभीषन सरल सुठि ।
सबके पूरहिं काम करुनानिधि करुना करहिं ॥६६८

सन्त सरन करुनायतन तव चरनन्ह मम माथ ।
प्रभु प्रताप जन जानि कइ कृपा करहु रघुनाथ ॥६६९

बिप्र बिमल विद्या तजहिं छत्री अस्त्रन्ह ग्यान ।
कह महेस तेहि देस कै रच्छक नित भगवान ॥६७०

लखन लाल सम भाइ एहि जग महँ बिरले मिलहिं ।
बहु दुख सहहिं अघाइ जेठ भ्रात के कारने ॥६७१

तजहु सोक समुझाइ मन यह नस्वर संसार ।
एक दिवस निह्चित निधन कोउ न मेटनहार ॥६७२

जे कोउ आये धारि तनु परे मीचु की गोद ।
काल ब्याल सब कहँ डसहि मानहु बाल बिनोद ॥६७३

समरभूमि महँ जे तजहिं लरत-लरत निज प्रान ।
ते जन पावहिं बीर गति करत जगत जस गान ॥६७४

श्री रघुपति जन दुखहरन रामराज सुखराज ।
सब बिधि ते मंगलकरन हरषित सकल समाज ॥६७५

रामराज्य महँ सुख सबहि नाहिं सोक नहिं रोग ।
दम्पति सन्तति सुख लहहिं नाहीं सहहिं बियोग ॥६७६

भारतीय संस्कृति सुभद बरनत मुदित महेस ।
जन्यकर्म ते सबहिं सुख बरषत सुधा सुरेस ॥६७७

रामराज महँ सुख सबहिं बहु उन्नति के सोत ।
सब सबकै सुख देखि कइ महत मगन मन होत ॥६७८

रामराज अनुपम सुखद सकल जगत के हेत ।
जन महेस मंगल महा सबन्ह चित्त हरि लेत ॥६७९

प्रजा केर रंजन करहि सोई राजा होइ ।
तेहि हित निज सरबस तजहि सुजन सराहहिं सोइ ॥६८०

सब दिन एक से रहत नहिं कह महेस सुनु मीत ।
कबहुँ चैन कै बाँसुरी कबहुँ बिरह के गीत ॥६८१

रामराज के लोग सब मुदित सहित परिवार ।
राम लेहिं सबकै खबरि जथाजोग ब्यवहार ॥६८२

जमुनाजू पावन परम करति त्रिबिध उधार ।
कहु महेस जिन्हकी कृपा मिटत सब दुखभार ॥६८३

जग्य करम महिमा अमित होइ बिस्व कल्यान ।
जाप जग्य प्रतिदिन करहिं जन महेस सनमान ॥६८४

साधु सन्त सेवहिं नितहिं देहिं बिस्वहिं ग्यान ।
रामकथा ते होइ मिल अस जीवन्ह कल्यान ॥६८५

बिस्वनाथजू धन्य अति सुठि सद्गुन आगार ।
जौं सब जन तेहि अनुसरहिं होइ सुखी संसार ॥६८६

सरसुति अरु लछिमी मिले होइ परम आनन्द ।
कहत महेस प्रताप जन सदबुधि रहइ अमन्द ॥६८७

आजा मंगल होइ गये बल बिक्रम आगार ।
तिन्हके बंसज हम्ह अधम भये महेस कुमार ॥६८८

रामदत्त बाबा भये हिय बिसाल तन छोट ।
कहत महेस प्रताप जन जाके मन महँ खोट ॥६८९

करहु आचरन सदा सुभ अरु गायत्री जाप ।
जन महेस पावहु सुखहिं मिटहिं सकल सन्ताप ॥६९०

बाँचि भागवत बेद पढि कीन्ह गयत्री जाप ।
ताहू पै मन मरत नहिं कहत महेस प्रताप ॥६९१

सन्ध्या पूजन उचित सुल ओहू ते आचार ।
बिनु चरित्र के सब बृथा करत महेस प्रचार ॥६९२

करुनाकर करुना करहु मानब बहुत निहोर ।
कामबासना ते हटइ महादुष्ट मन मोर ॥६९३

पचपन बरष गँवाइ कइ छपनहि कीन्ह प्रबेस ।
मुल मन मानत नहिं अजहुँ धारत अगनित भेस ॥६९४

अरे एकतहि महाबन रहहु मेल करि एक ।
जाते अरि बोलै नहीं कहत महेस बिबेक ॥६६५

स्वारथ के बहु मीत जग बिपति परे कोउ कोउ ।
एहिते रहहु सचेत होइ ना बिपदा महँ होउ ॥६६६

जहाँ दादुरन्ह भीर बहु तहँ तिन्ह केर प्रभाव ।
कह महेस रहु हंस चुप तजहि न कबहु सुभाव ॥६६७

गीता कै करि पाठ जन रामायनहू पढइ ।
धारइ सज्जन ठाठ कह महेस सबिनय सबहि ॥६६८

आजु बिदाई होइ रही आई कालिह बरात ।
रामेसुर तनया भले पांडेन्ह के घर जात ॥६६९

पढ़हिं रसिकजन सतसई मन महँ लेहिं बिचारि ।
जन महेस बिनती करइ त्रुटियन्ह देहिं सुधारि ॥७००

डॉ० अवस्थी के प्रकाशित ग्रन्थ

१—विनय पदावली (पद)	१९५९ ई०
२—प्रेम प्रकाश (काव्य संग्रह)	१९६५ ,,
३—समाज पथिक (,,)	१९६५ ,,
४—संस्कृत भाषा शिक्षण (शिक्षण विधि)	१९६८ ,,
५—हिन्दी भाषा शिक्षण (,,)	१९६९ ,,
६—सरल सन्ध्या तथा अनुष्ठान विधि (कर्मकाण्ड)	१९७६ ,,
७—अवधी लोकगीत-भाग १ (लोकगीत संग्रह)	१९८५ ,,
८— ,, भाग २ (,,)	१९८५ ,,
९—अवधी लोकगीत हजारा (,,)	१९८५ ,,
१०—अवधी लोकगीतों के अनोखे स्वर (,,)	१९८५ ,,
११—अवधी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन (संकलन)	१९८५ ,,
१२—सरल गायत्री हवन विधि (कर्मकाण्ड)	१९८६ ,,
१३—गोस्वामी तुलसीदास (जीवनी)	१९८७ ,,
१४—महेस सतसई (दोहा-सोरठा संग्रह)	१९८७ ,,

अप्रकाशित ग्रन्थ

१—सरल हिन्दी भागवत (महापुराण)	१९६४ ,,
२—सहकारिता सन्देश (काव्य संग्रह)	१९६५ ,,
३—अरविन्द तथा स्वामी रामतीर्थ (जीवनी)	१९८१ ,,
४—लोकगीत रामायण (लोकगीत-संग्रह)	१९८६ ,,
५—जन रामायन (प्रबन्ध काव्य)	१९८७ ,,

अभिमत

डा० महेशप्रतापनारायण अवस्थी हिन्दी के समर्थ हस्ताक्षर है, जिनके बहुत से ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं और कई शीघ्र प्रकाश्य है। प्रस्तुत ग्रन्थ 'महेस सतसई' में ७०० दोहे संग्रहीत है, जो डा० अवस्थी के मतानुसार 'अवधी हिन्दी' मे है। वास्तव मे हिन्दी की अनेक बोलियाँ है, जिनमे अवधी प्रमुख है। डा० अवस्थी इन बोलियो को हिन्दी के साथ रखकर कहना समीचीन समझते है, जैसे—अवधी हिन्दी, भोजपुरी हिन्दी, गढवाली हिन्दी, राजस्थानी हिन्दी आदि। उनका कथन है कि इस प्रकार जनसाधारण को सहज ही यह बोध होगा कि मैथिली, अवधी गढवाली, राजस्थानी आदि हिन्दी से अलग नहीं है, प्रत्युत हिन्दी की ही उपभाषाएँ हैं। यह सर्वविदित है कि बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा आदि प्रदेशों की मातृभाषा हिन्दी है, जिसमे अनेक बोलियाँ है। बोलियो का रूप राष्ट्रभाषा हिन्दी से बहुत कुछ भिन्न है, क्योंकि बोली (उपभाषा) में स्थानीयता एवं राष्ट्रभाषा मे सार्वदेशिकता की प्रधानता रहती है। प्रायः लोग अपने घरेलू जीवन मे अपनी बोली बोलते हैं और घर-गाँव से बाहर नगरो तथा कार्यालयो में राष्ट्रभाषा मे अपने विचार व्यक्त करते है।

प्रस्तुत सतसई मे कवि के निजी जीवन, परिवार, ग्राम आदि से सम्बन्धित भी बहुत से दोहे हैं। अच्छा होता कि इनका विषय-विभाजन भी प्रस्तुत किया जाता, जिससे पाठकों को सम्बन्धित विषय देखने मे सुविधा होती। अवधी हिन्दी का यह प्रयास श्लाघ्य है।

रंजना मिश्र, मंत्री
हिन्दी प्रचार परिषद, प्रयाग